www.sanjanabharati.com

दिल्ली और गौतम बुद्ध नगर से प्रकाशित। हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड व उत्तराखंड में प्रसारित

facebook.com/Sanjanabharati

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

संजना भारती

RNI No. : DELHIN/2016/70240

आपका भरोसा, हमारी ताकत

2 चीन से क्या हम भाषायी बोध सीख सकते हैं?

3 हमारी इंडस्ट्री में आज भी हीरो को पूजा जाता है...

4 बेटियां किसी भी क्षेत्र में बेटों से पीछे नहीं: विधायक

वर्ष: 10 | अंक: 81 | दिल्ली, मंगलवार, 13 जनवरी 2026 | पृष्ठ संख्या: 4 | मूल्य: 1 रुपया

संक्षिप्त समाचार

लोहड़ी, मकर संक्रांति, पोंगल और माघ बिहू की पूर्व संध्या पर राष्ट्रपति ने देशवासियों को दी शुभकामनाएं

नई दिल्ली (एजेन्सी)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने लोहड़ी, मकर संक्रांति, पोंगल और माघ बिहू (जो क्रमशः 13 और 14 जनवरी को पड़ते हैं) की पूर्व संध्या पर देशवासियों को शुभकामनाएं दी हैं। राष्ट्रपति ने एक संदेश में कहा, लोहड़ी, मकर संक्रांति, पोंगल और माघ बिहू त्योहारों के शुभ अवसर पर, मैं भारत और विदेश में रहने वाले सभी भारतीयों को हार्दिक शुभकामनाएं देती हूं। ये त्योहार हमारी समृद्ध कृषि परंपराओं और राष्ट्रीय एकता के प्रतीक हैं। ये हमारी जीवंत और विविध सांस्कृतिक विरासत का प्रतिबिंब हैं। ये त्योहार हमारे किसानों की कड़ी मेहनत को सलाम करने का अवसर हैं जो देश को भोजन खिलाने के लिए अथक प्रयास करते हैं। देश भर में मनाए जाने वाले इन त्योहारों के माध्यम से, हम प्रकृति माँ के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। इस शुभ अवसर पर मैं कामना करती हूं कि हमारे समाज में प्रेम और एकजुटता की भावना और मजबूत हो और हम समृद्ध राष्ट्र के निर्माण के लिए मिलकर काम करें।

भारत की 'जेनरेशन जेड' रचनात्मकता से भरपूर है-प्रधानमंत्री मोदी

नई दिल्ली (एजेन्सी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी नई दिल्ली में विकसित भारत युवा नेता संवाद 2026 के समापन सत्र में भाग लिए। इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने प्रदर्शनी का भी दौरा किया और युवा नेताओं से बातचीत कर उनके नवाचारों और विचारों से अवगत हुए। मोदी ने कहा कि अपने युवाओं की प्रतिभा को पहचानते हुए, हमने एक नया दृष्टिकोण अपनाया। युवाओं को सशक्त बनाने पर ध्यान केंद्रित करते हुए, सरकार ने नई योजनाएं शुरू कीं, जिन्होंने भारत में स्टार्टअप क्रांति को गति प्रदान की। प्रधानमंत्री मोदी ने विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग में कहा कि भारत की जेनरेशन जेड रचनात्मकता से भरपूर है। उन्होंने कहा कि कहा कि नवोन्मेषी विचारों, ऊर्जा और उद्देश्य के साथ युवा शक्ति राष्ट्र निर्माण में अग्रणी भूमिका निभा रही है। उन्होंने जोर देकर कहा कि मुझे अपने देश के युवाओं पर भरोसा है, आपके सामर्थ्य पर भरोसा है, इसलिए हमने एक अलग राह चुनी। हमने युवाओं को ध्यान में रखते हुए एक के बाद एक नई स्कीम्स बनाई... यहीं से स्टार्टअप क्रांति ने भारत में असली गति पकड़ी।

उपराष्ट्रपति ने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के 9वें दीक्षांत समारोह को संबोधित किया

आधुनिक विज्ञान और पारंपरिक मूल्यों का साथ-साथ विकास होना चाहिए : सी.पी. राधाकृष्णन

संजना भारती/पीआईबी

नई दिल्ली। उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन ने नई दिल्ली में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के 9वें दीक्षांत समारोह को संबोधित किया, स्नातक छात्रों को बधाई दी और उनसे अपने ज्ञान और कौशल को राष्ट्र की सेवा में समर्पित करने का आग्रह किया।

उपराष्ट्रपति ने स्वामी विवेकानंद की जयंती पर उनके उपदेशों का स्मरण करते हुए कहा कि शिक्षा को केवल डिग्री तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि इसका उद्देश्य चरित्र निर्माण करना, बुद्धि को सुदृढ़ करना और व्यक्तियों को आत्मनिर्भर बनाना होना चाहिए। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि उचित शिक्षा और प्रशिक्षण ही भारत के युवाओं को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 2047 तक विकसित भारत के सपने को साकार करने में सक्षम बनाएगा।

उपराष्ट्रपति ने भारत की ज्ञान की सभ्यतागत परंपरा को रेखांकित करते हुए नालंदा और तक्षशिला जैसे प्राचीन शिक्षा केंद्रों का उल्लेख किया और कहा कि उपनिषदों और भगवद् गीता से लेकर कौटिल्य के अर्थशास्त्र और तिरुवल्लुवर के तिरुक्कुरल तक, भारतीय धर्मग्रंथों और प्राचीन पुस्तकों ने निरंतर शिक्षा को सामाजिक और नैतिक जीवन के केंद्र में रखा। उन्होंने रेखांकित किया कि सच्ची शिक्षा आचरण और चरित्र का निर्माण करती है और यह केवल डिग्री प्राप्त करने तक सीमित नहीं है। उपराष्ट्रपति ने इस बात पर बल दिया कि आधुनिक विज्ञान और पारंपरिक मूल्यों का साथ-साथ विकास होना चाहिए। जेएनयू के लोकतांत्रिक मूल्यों का उल्लेख करते हुए उपराष्ट्रपति ने कहा कि बहस, चर्चा, असहमति और यहां तक कि टकराव भी एक स्वस्थ लोकतंत्र के आवश्यक तत्व हैं। यद्यपि, उन्होंने यह भी कहा कि इन प्रक्रियाओं का अंततः एक निष्कर्ष पर पहुंचना अनिवार्य है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि एक बार निर्णय ले लेने के बाद, सुचारू और प्रभावी प्रशासन सुनिश्चित करने के लिए इसके कार्यान्वयन में सहयोग करने की सामूहिक इच्छाशक्ति होनी चाहिए। उपराष्ट्रपति ने जेएनयू के समावेशी वातावरण और छात्र प्रवेश तथा संकाय भर्ती दोनों में समानता और सामाजिक समावेश को बढ़ावा देने के लिए विश्वविद्यालय द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की।

उपराष्ट्रपति ने उभरते और सभ्यतागत क्षेत्रों में विश्वविद्यालय के शैक्षणिक विस्तार के लिए विश्वविद्यालय के नेतृत्व की सराहना की, जिसमें संस्कृत और भारतीय अध्ययन संकाय में हिंदू, जैन और बौद्ध अध्ययन के नए केंद्रों की स्थापना भी शामिल है। उन्होंने तमिल अध्ययन के विशेष केंद्र और असमिया, ओडिया, मराठी और कन्नड़ में पाठ्यक्रमों और प्रोग्राम जैसी पहलों के माध्यम से भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने के लिए जेएनयू के निरंतर प्रयासों की भी प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति की भावना के अनुरूप मातृभाषाओं में ज्ञान सृजन को बढ़ावा मिलना चाहिए।

इस अवसर पर केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री कंवल सिबल, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर शांतिश्री धुलिपुडी पंडित, वरिष्ठ अधिकारी, संकाय सदस्य, स्नातक छात्र और उनके परिवार उपस्थित थे।

दिल्ली विश्वविद्यालय में छात्रसंघ पदाधिकारी सम्मान समारोह का हुआ आयोजन

संजना भारती संवाददाता

नई दिल्ली। स्वामी विवेकानंद जी की जयंती के अवसर पर सोमवार को अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद एवं दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ के संयुक्त तत्वावधान में दिल्ली विश्वविद्यालय में छात्रसंघ पदाधिकारी सम्मान समारोह का सफलतापूर्वक आयोजन हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि दिल्ली सरकार के कैबिनेट मंत्री रविन्द्र इन्द्राज सिंह, अभाविप की अखिल भारतीय छात्रा कार्य प्रमुख मनु शर्मा कटारिया एवं अभाविप दिल्ली के प्रदेश मंत्री श्री सार्थक शर्मा द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया। जिसके उपरांत, दिल्ली सरकार के मंत्री श्री इन्द्राज सिंह अभाविप की अखिल भारतीय छात्रा कार्य प्रमुख मनु शर्मा कटारिया तथा अभाविप दिल्ली के प्रदेश मंत्री सार्थक शर्मा की उपस्थिति में दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ के पदाधिकारियों को सम्मानित किया।

मुख्य अतिथि श्री इन्द्राज ने उपस्थित छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि, "राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर आज जब मैं अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के नेतृत्व में दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ द्वारा उत्कृष्ट छात्रसंघों के सम्मान समारोह का साक्षी बना, तो यहां उपस्थित निर्वाचित एवं विजयी पदाधिकारियों की उपस्थिति अपने आप में बहुत कुछ कहती है। आप सभी अपने संस्थान के प्रत्येक छात्र का प्रतिनिधित्व करते हैं और मुझे विश्वास है कि आगे चलकर आप देश का भी प्रतिनिधित्व करेंगे। सार्वजनिक जीवन में मेरे प्रारंभिक अनुभवों और स्वामी विवेकानंद जी के युवाओं को उनकी आंतरिक शक्ति जागृत करने के आान से प्रेरित होकर मैं कह सकता हूं कि अभाविप छात्र हित एवं राष्ट्र हित के विचारधारा का दृढ़ प्रहरी रही है। अभाविप ने निरंतर पीढ़ियों को अनुशासित, राष्ट्रनिष्ठ नेतृत्व के रूप में गढ़ा है, जो 2047 तक विकसित भारत के निर्माण की यात्रा को निरंतर आकार दे रहे हैं।

कार्यक्रम के दौरान अभाविप की अखिल भारतीय छात्रा कार्य प्रमुख छात्रा कार्य प्रमुख मनु शर्मा कटारिया ने कहा कि मैं स्वामी विवेकानंद जी की निर्भीक शक्ति और आत्मबोध की परिकल्पना को अभाविप के परिवर्तनकारी कार्यों में सजीव रूप में देखती हूं। विशेष रूप से स्क्रीन टाइम से एक्टिविटी टाइम अभियान युवाओं को डिजिटल भटकाव से निकालकर सार्थक और वास्तविक सामाजिक कार्यों से जोड़ने की प्रेरणा देता है। मैंने अभाविप के महिला सशक्तिकरण के प्रयासों को निकट से देखा है-चाहे वह परिसर सुरक्षा अभियान हों, मिशन साहसी आत्मरक्षा शिविर हों या एसएफएस, एसएफडी, आरकेएम जैसे कौशल एवं व्यक्तित्व विकास मंच। ये सभी प्रयास छात्राओं को आत्मविश्वासी नेतृत्वकर्ता के रूप में आगे बढ़ाने का कार्य कर रहे हैं। राष्ट्रीय युवा दिवस पर आयोजित यह डूसू सम्मान समारोह अभाविप की गौरवशाली विरासत का सशक्त प्रमाण है, जो प्रत्येक छात्र को स्वामी विवेकानंद जी के आत्मिक बल और सेवा भाव के आदर्शों को अपनाकर सशक्त एवं प्रगतिशील भारत के निर्माण के लिए प्रेरित करता है।

कार्यक्रम के दौरान दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ अध्यक्ष आर्यन मान, छात्रसंघ सचिव कुणाल चौधरी उपस्थित रहें।

बीएचयू के प्रोफेसर शंकर कुमार मिश्रा राष्ट्रीय गौरव सम्मान से हुए सम्मानित

एसबी संवाददाता

वाराणसी। अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार अपराध नियंत्रण संगठन, नई दिल्ली के स्थापना दिवस के अवसर पर मानवाधिकारों की रक्षा, सामाजिक न्याय और राष्ट्रहित को समर्पित एक भव्य एवं गरिमामय सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस ऐतिहासिक अवसर पर देश-विदेश से पधारे मानवाधिकारों के प्रति निष्ठावान सदस्यों, सामाजिक चिंतकों एवं प्रबुद्धजनों को सम्मानित किया गया।

राष्ट्रीय गौरव सम्मान से सम्मानित होते हुए प्रो शंकर कुमार मिश्रा। (छाया: एसबी)

कार्यक्रम की शोभा मुख्य अतिथि पूर्व सांसद के. सी. त्यागी, उत्तराखंड हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश लोकपाल सिंह तथा दिल्ली के पूर्व पुलिस आयुक्त संजय सिंह की विशिष्ट उपस्थिति से और भी बढ़ गई। समारोह की अध्यक्षता संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष मोहित नवानी ने की, जिनके नेतृत्व में संगठन मानवाधिकार संरक्षण के क्षेत्र में निरंतर सक्रिय भूमिका निभा रहा है। समारोह के केंद्रीय क्षण में काशी हिंदू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. शंकर कुमार मिश्रा को उनके शैक्षणिक, सामाजिक एवं मानवाधिकार मूल्यों के संरक्षण में किए गए उत्कृष्ट योगदान हेतु राष्ट्रीय गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उनके ओजस्वी व्यक्तित्व, निष्ठा और समाजोपयोगी जीवन-दृष्टि का जीवंत प्रमाण है।

कंबल वितरण और भंडारे का आयोजन संग पिपराकोठी स्थित अघोर परंपरा की प्राचीन साधनास्थली की जमीन पर स्कूल के नाम पर कब्जे का भारी विरोध

संजना भारती संवाददाता

मोतिहारी। बिहार राज्य के मोतिहारी शहर में पिपराकोठी स्थित एक जगह है, जिसका नाम है-'बाबा टेकमन राम समाधि स्थल'। यह जगह सनातन और अध्यात्म की सर्वोच्च अवस्था औघड़/अघोरी परंपरा से जुड़ी है।

स्थानीय व्यवस्थापक श्री बिगु दास जी बाबा के सहयोग से वाराणसी स्थित अघोर परंपरा के विश्वविख्यात सिद्ध स्थान और पूरी दुनिया में अघोर परंपरा के हेडक्वार्टर के रुप में विख्यात, 'बाबा कीनाराम स्थल, क्रीं-कुण्ड' के अंतर्गत यहां की व्यवस्था संचालित होती है। पूरी दुनिया में अघोर परंपरा के आराध्य-ईष्ट तथा ' बाबा कीनाराम स्थल, क्रीं-कुण्ड' के वर्तमान पीठाधीश्वर, अघोराचार्य महाराजश्री बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी के मालिकाना हक में आने वाला यह स्थान और इससे जुड़ी समस्त जमीन के कुछ हिस्से पर स्कूल निर्माण के नाम पर कुछ दिनों पहले कब्जे का प्रयास किया गया है। सत्ता से जुड़े स्थानीय राजनीतिक व्यक्तियों द्वारा इस तरह के कुटिल और कुत्सित प्रयासों से अघोर परंपरा के लाखों श्रद्धालुजन स्थानीय शासन-प्रशासन से बुरी तरह नाराज हैं। इसी मद्देनजर दिनांक 12 जनवरी 2026 को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित की गई।

प्रेस कॉन्फ्रेंस में वाराणसी से आए एक प्रतिनिधिमंडल ने स्थानीय व्यवस्थापकों के सहयोग से पत्रकारों को संबोधित करते हुए अपना सामाजिक और कानूनी पक्ष पत्रकारों के सामने रखा। प्रधान व्यवस्थापक अरुण सिंह ने अघोर परम्परा से सम्बंधित इस जमीन के एक हिस्से पर अवैध रूप से कब्जे के प्रयास की निंदा किया। उन्होंने कहा कि "इस मठ से जुड़े कागजात कानूनी रूप से जब अघोर परम्परा के हेडक्वार्टर के अधीन है तो इस तरह के प्रयासों को सिवाय अवैध कब्जे के और कुछ भी कहना बेकार है और हम इस प्रयास का जमकर विरोध करते हैं और शासन-प्रशासन से न्याय की उम्मीद रखते हैं"। संस्था की महिला मण्डल की प्रधान संयोजिका श्रीमती रुबी सिंह ने आक्रामक रुख अपनाते हुए इस अनाधिकृत कब्जे का विरोध किया।

सत्ता से जुड़े स्थानीय राजनीतिज्ञों पर हमला करते हुए रुबी सिंह ने कहा कि " आप सामाजिक कार्यों की आड़ में किसी के घर का एक हिस्सा हड़प नहीं सकते"। रूबी सिंह ने तीखा प्रहार करते हुए स्थानीय राजनीतिज्ञों और शासन-प्रशासन को आगाह किया कि "सनातन के संरक्षण वाली सरकार के कुछ छद्मधारी लोगों के इस प्रयास पर हम शर्मिंदा हैं और सनातन की शानदार विरासत की जमीन पर कब्जे का ये मामला शर्मसार कर देने वाला घटनाक्रम है और हम इसका पुरजोर विरोध करते हैं"।

स्थानीय समाजसेवी और अनुयायी रजनीश पुष्कर ने शासन प्रशासन को चेतावनी देते हुए आगाह किया कि "अघोरियों/ औघड़ों से ज्यादा राष्ट्रभक्त और समाज के सेवक कौन है। इस पुण्य जमीन पर कब्जे का ये प्रयास सनातन संस्कृति के अपमान का घिनौना प्रयास है, ऐसा कर उन्होंने अपने सर्वनाश को आमंत्रण दिया है"। शुरूआत की तरह अंत में प्रेस कॉन्फ्रेंस की अगुवाई कर रहे नीरज वर्मा ने फिर से स्पष्ट किया कि "पिपराकोठी स्थित अघोरियों/औघड़ों की जमीन, स्थानीय व्यवस्थापक बाबा बिगु दास की सहयोग से अघोर परंपरा के केंद्र स्थान "बाबा कीनाराम स्थल, क्रीं-कुण्ड" वाराणसी द्वारा संचालित है और पूरी अघोर परंपरा के आराध्य अघोराचार्य बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी के अधीन है"।

नीरज वर्मा ने भारत के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से आग्रह किया कि "वो इस मामले को गंभीरतापूर्वक संज्ञान में लेकर सीधा और त्वरित हस्तक्षेप करें ताकि सनातन की प्राचीनतम परंपरा पर कुठाराघात बंद हो"।

इस प्रेस कॉन्फ्रेंस के बाद बाबा टेकमन राम जी समाधि परिसर में स्थानीय व्यवस्थापकों के सहयोग से आए हुए प्रतिनिधिमंडल ने स्थानीय जरूरतमंदों में, कंबल वितरण किया।

इस अवसर पर एक विशाल भंडारा भी आयोजित किया गया, जिसमें सैकड़ो लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया।

लोनी विधायक नंदकिशोर गुर्जर के सुपुत्र नागेश गुर्जर का एक गेस्ट के तौर पर SHUBH KADAM 2.0 के ऑफिशियल लॉन्च इवेंट में शामिल हुआ। यह इवेंट क्राउन प्लाजा, मयूर विहार, नई दिल्ली में हुआ और यह बहुत अच्छे से ऑर्गनाइज किया गया और प्रभावशाली था। कम इन्वेस्टमेंट पर बेहतर रिटर्न का मौका, प्री-लॉन्च कीमतों पर EOI बुकिंग और प्रोजेक्ट की डिटेल में जानकारी सच में तारीफ के काबिल थी। इस इवेंट को सफलतापूर्वक ऑर्गनाइज करने के लिए NPR Infra Advisors Pvt. Ltd. की पूरी टीम को दिल से बधाई दिया। यह प्रोजेक्ट इन्वेस्टर्स के लिए निश्चित रूप से एक शुभ कदम (सही दिशा में एक कदम) साबित होगा। (छाया: संजना भारती)

गंगा ग्लोबल बीएड कालेज में राष्ट्रीय युवा दिवस समारोह सह भाषण प्रतियोगिता का आयोजन

कोमल कुमारी-प्रथम, सिद्धि भारती-द्वितीय तथा शिप्रा राय ने प्राप्त किया तृतीय स्थान

संजना भारती संवाददाता

बेगूसराय। गंगा ग्लोबल इंस्टीट्यूट ऑफ टीचर एजुकेशन में प्रशिक्षुओं ने स्वामी विवेकानंद जी की 163वीं जयंती के अवसर पर राष्ट्रीय युवा दिवस समारोह का आयोजन किया। कार्यक्रम का उद्घाटन प्राचार्य डॉ नीरज कुमार एवं सभी प्राध्यापकों ने सामूहिक रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर किया।

प्राचार्य नीरज कुमार ने अपने संबोधन में कहा कि स्वामी विवेकानंद का विश्वास था कि यदि युवाओं में आत्मबल और अनुशासन हो, तो भारत को आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता। युवाओं को आज स्वामी विवेकानंद जी के विचारों को पढ़ने की जरूरत है।

उक्त अवसर पर गीत-संगीत, कविता के साथ भाषण प्रतियोगिता में प्रशिक्षुओं ने भाग लिया। निर्णायक मंडल में डॉ कामायनी कुमारी, डॉ अंजली तथा प्रो परवेज यूसुफ उपस्थित थे। प्रथम स्थान प्राप्त किया कोमल कुमारी, द्वितीय स्थान सिद्धि भारती तथा तृतीय स्थान प्राप्त किया शिप्रा कुमारी ने। राष्ट्रीय युवा दिवस केवल एक तिथि नहीं, बल्कि भारत के आत्मविश्वास की याद है। युवाओं को अपने अंदर आत्मविश्वास बढ़ाने की जरूरत है। सहायक प्राध्यापक प्रो सुधाकर पांडेय, प्रो परवेज यूसुफ, डॉ अंजली, प्रो विपिन कुमार, डॉ कामायनी कुमारी, डॉ अविनाश कुमार, डॉ अनिता एस, प्रो कुंदन कुमार ने संबोधन किया और शुभकामनाएं दी।

कार्यक्रम में सत्र 2025-27 की सरस्वती कुमारी, कोमल कुमारी, सिद्धि कुमारी, स्वीटी कुमारी, शिप्रा राय, अनुकृति कुमारी, सोनम प्रिया, मो. सलमान, रिशभ कुमार, श्वेता राज, पुष्पिता कुमारी, आनंद कुमार मिश्रा आदि प्रशिक्षुओं ने भाग लिया। उक्त अवसर पर प्रो अमर कुमार, प्रो पिंटू कुमार, आलोक कुमार तथा प्रथम वर्ष के साथ द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षु शिवम कुमार, सौरभ कुमार, गौरव कुमार आदि उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संयोजन किया प्रो परवेज यूसुफ ने तथा मंच संचालन श्वेता राज ने किया।

आगामी बसंत पंचमी को होगा पुरस्कार वितरण समारोह

संजना भारती ब्यूरो प्रमुख इंतजार हुसैन बदायूं। रामनाथ राम नारायण मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट के तत्वाधान में संचालित हो रहे शिखर इंस्टीट्यूट ऑफ फामेसीं एंड नर्सिंग, शेखूपुर (बदायूँ) द्वारा दिनांक 4 जनवरी 2026 को आयोजित शिखर विज्डम क्वेस्ट 3.0-2026 की परीक्षा का परिणाम सोमवार को शिखर इंस्टीट्यूट की आधिकारिक वेबसाइट https://sip-budaun.co.in पर घोषित कर दिया गया है। 23 जनवरी 2026 को बसंत पंचमी के दिन शेखूपुर स्थित शिखर इंस्टीट्यूट ऑफ फामेसीं एंड नर्सिंग में शिखर विज्डम क्वेस्ट 3.0-2026 का भव्य पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया जाएगा। पुरस्कार वितरण समारोह कार्यक्रम में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये जायेंगे समारोह में उपस्थित अतिथियों द्वारा शिखर विज्डम क्वेस्ट 3.0-2026 के विजेता छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया जाएगा। इस प्रतियोगिता में सत्यदेव विद्यापीठ इंटर कॉलेज जवाहर नगला की नीति राठौर, ब्लूमिंग फ्लोवर इंग्लिश स्कूल, बिसौली की स्तुति वार्ष्णेय, बाबा इंटरनेशनल के अग्रिम चांडक, संतोष कुमारी श्रवण कुमार अग्रवाल सरस्वती विद्या मन्दिर उझानी के प्रताप यादव तथा शिव देवी सरस्वती विद्या मन्दिर के रिशु यादव ने प्रथम स्थान पाकर लैपटॉप जीता है।

सम्पादकीय

अमेरिका की निगाह ईरान पर

ईरान में दिसंबर 2025 के आखिरी दिनों में आर्थिक संकट से भड़का आंदोलन अब सत्ता के खिलाफ खुले विद्रोह में बदल चुका है। ईरान की सड़कों पर इस समय भयावह मंझार है। एक तरफ सुप्रीम लीडर अयातुल्ला अली खामेनेई के खिलाफ सड़कों पर उबाल जारी है, तो वहीं प्रदर्शनकारियों को आतंकवादी करार देते हुए उन्हें कुचला जा रहा है। लेकिन यह केवल आंतरिक हिंसा नहीं है, बाहर से अमेरिका इस आग में घी डालने का काम लगातार कर रहा है। डोनाल्ड ट्रंप भले खुद को नोबेल शांति पुरस्कार के लिए सबसे योग्य मानें, असल में वे युद्ध अपराधों और मासूमों की जान लेने के दोषी ठहराए जाने चाहिए। वेनेजुएला पर तो ट्रंप अपना दावा ठोंक ही चुके हैं, अभी उन्होंने एक तस्वीर भी जारी की है, जिसमें वो खुद को वेनेजुएला का कार्यवाहक राष्ट्रपति दिखा रहे हैं। किसी देश की संप्रभुता और सम्मान के साथ ऐसा मजाक आधुनिक सभ्यता में नहीं किया जा सकता। लेकिन ट्रंप सभ्यता, कूटनीति और नैतिकता के तकाजों को मानते ही नहीं हैं। उन्हें केवल मुनाफे की परिभाषा समझ आती है। ट्रंप ने वेनेजुएला के बाद ग्रीनलैंड हड़पने की चेतावनी दी है। उत्तर अमेरिका और आर्कटिक के बीच बसा ग्रीनलैंड ट्रंप को अपने लिए सामरिक महत्व का लगता है, लेकिन केवल इस वजह से उस पर कब्जे की इजाजत नहीं दी जा सकती। ग्रीनलैंड डेनमार्क का अर्द्धस्वायत्त वाला देश है, यहां के लोग खुद अपना शासन चलाते हैं लेकिन विदेश नीति और सेना डेनमार्क के पास है। डेनमार्क ने साफ चेतावनी दी है कि अगर ट्रंप ने ग्रीनलैंड पर सैन्य कार्रवाई की, तो नाटो खत्म हो जाएगा। फ्रांस, इटली, जर्मनी जैसे बाकी देश भी अब ट्रंप से सावधान हो चुके हैं। जब अमेरिका की पूंजीवादी विस्तारवादी नीति एशिया या अफ्रीका के देशों को अपनी चपेट में लेती रही, तो ये यूरोपीय देश लोकतंत्र और उदारवाद के नाम पर अमेरिका का साथ देते आए। मगर अब खुद उन पर आंच आनी शुरू हुई तो उन्हें समझ आ रहा है कि-

लगेगी आग तो आएंगे घर कई जद में,
यहां पे सिर्फ हमारा मकान थोड़ी है।। -राहत इंदौरी।

बहरहाल, यूरोपीय देशों को जो खतरा अब दिख रहा है, ईरान से उसे पहले ही भांप लिया था। हालांकि इसमें ईरानी शासन की अपनी खामियां भी हैं, लेकिन उसे अपने स्तर पर सुधरने का मौका दिया जाना चाहिए, न कि इसमें बाहरी ताकतों का दखल होना चाहिए। इस समय ईरान में आर्थिक संकट से खड़े हुए आंदोलन के बाद तख्तापलट का खतरा बढ़ गया है। पिछले साल 28 दिसंबर को शुरू हुए जनआंदोलन में अब तक 5 सौ से ज्यादा मौतें हो चुकी हैं और 10 हज़ार से ज्यादा लोग बंदी बनाए गए हैं। 1979 में हुई इस्लामिक क्रांति के बाद 47 साल में ऐसा आंदोलन कभी नहीं देखा गया। हालांकि इस बीच महसा अमीनी की मौत के बाद महिला अधिकारों को लेकर 2022 में आंदोलन हुआ था, लेकिन उसकी प्रकृति अलग थी। इन विरोध प्रदर्शनों पर ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अराघची ने कहा है कि आतंकवादियों ने न केवल नागरिकों बल्कि सुरक्षा बलों को भी निशाना बनाया है, जिनका उद्देश्य देश को अस्थिर करना है। उनका यह भी कहना है कि सुरक्षाबलों ने जरूरत पड़ने लायक ही कार्रवाई की है। वहीं डोनाल्ड ट्रंप ने चेतावनी दी कि अगर प्रदर्शनकारियों को मारा जाता है, तो वह 'ज़ोरदार हमला करेंगे'। ट्रंप ने कहा कि वह 'वहीं चोट देंगे, जहां सबसे ज्यादा दर्द होगा'।' यह सड़कछाप भाषा ईरान का तेल हथियाने और उसके परमाणु कार्यक्रम बंद कराने के लिए है। पिछले साल इजरायल के जरिए एक बार यह कोशिश अमेरिका कर चुका है। इस बार ईरान के लोगों का ही इस्तेमाल किया जा रहा है। ट्रंप ने साफ कहा है कि अमेरिका ईरानी शासन का विरोध करने वालों की मदद के लिए तैयार है। हालांकि ईरान ने इसके जवाब में कहा है कि अगर ऐसा होगा, तो वो क्षेत्र में अमेरिकी सहयोगियों और उसके हितों पर हमला करेगा। इस बीच, ईरान के निर्वासित क्राउन प्रिंस रजा पहलवी ने प्रदर्शनकारियों से सड़कों पर डटे रहने की अपील की है। 1979 की इस्लामिक क्रांति के बाद रेजा पहलवी के पिता हू शाह पहलवी को सत्ता से हटा दिया गया था। अब हू पहलवी निर्वासन में रहकर आंदोलन को नेतृत्व करने की कोशिश कर रहे हैं। इस बार पहलवी परिवार की वापसी की मांग वाले नारे भी सुने जा रहे हैं, इससे संकेत मिल रहे हैं कि कहीं ईरान में अपनी पिट्ठू सरकार बनाने की तैयारी तो अमेरिका की नहीं है। इधर ईरान में प्रदर्शन रोकने के लिए सरकार ने इंटरनेट ब्लैकआउट का सहारा लिया है, लेकिन यह कितना कारगर होगा, कहा नहीं जा सकता। अयातुल्लाह खामेनेई को सबसे पहले आर्थिक संकट दूर करने के उपाय तलाशने होंगे। ईरान की कमाई का सबसे बड़ा जरिया कच्चा तेल है। लेकिन अमेरिका और पश्चिमी देशों ने पहले से ही ईरान पर कई तरह के प्रतिबंध लगा रखे हैं। इससे ईरानी मुद्रा रियाल काफी गिरकर एक डॉलर के मुकाबले 14 लाख रियाल तक पहुंच चुकी है।

जयंती

डी. आर. बेंद्रे

जन्म-13 जनवरी, 1896, कर्नाटक; मृत्यु-26 अक्टूबर, 1981, महाराष्ट्र, कन्नड़ भाषा के प्रसिद्ध कवि थे। उन्होंने कन्नड़ काव्य को सम्माननीय ऊँचाई दिलवाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया था। उनका प्रथम कविता संग्रह प्रकाशित होने से पूर्व ही समाज ने उन्हें एक कवि के रूप में अंगीकार कर लिया था। दत्तात्रेय जी के विशिष्ट योगदान को देखते हुए उन्हें 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' (1958) और 'पद्मश्री' (1968) भी प्रदान किया गया था।

पुण्यतिथि

शौक बहराइची

जन्मः 6 जून, 1884 – मृत्युः 13 जनवरी, 1964, का वास्तविक नाम 'रियासत हुसैन रिजवी' था। ये बहुत प्रसिद्ध शायर थे। नेताओं व गलत कार्यों में लिप्त व्यक्तियों पर कटाक्ष करने के लिए नीचे दिया गया शेर देश में सर्वाधिक इस्तेमाल होता है पर बहुत कम ऐसे लोग हैं, जिन्हें यह पता होगा कि इस शेर को लिखने वाले शायर का नाम 'शौक बहराइची' है।

'बर्बाद गुलिस्तां करने को बस एक ही उल्लू काफी है
हर शाख पे उल्लू बैठें हैं अंजाम ऐ गुलिस्तां क्या होगा।'

कल मिलेंगे

पति ने पत्नी को मैसेज किया-आज रात डिनर पर मेरे साथ कुछ दोस्त आ रहे हैं, अच्छा सा खाना बनाना...!
पत्नी का कोई जवाब नहीं आया...!
फिर पति ने दूसरा मैसेज किया- मेरी सैलरी ज्यादा हो गई है, अगले महीने तुम्हें सोने की अंगूठी लाकर दूंगा...!
पत्नी ने रिप्लाई किया- ओ माय गॉड, सच्ची...!
पति- नहीं, वो तो मैं चेक कर रहा था कि मेरा पहला मैसेज मिला या नहीं, वरना तुम बोलोगी मुझे तो मैसेज मिला ही नहीं...!

संजना भारती दैनिक

भगवान शंकर जी के 11वें रुद्रावतार हनुमान जी (मेंहदीपुर, श्री बाला जी) के संरक्षण में संचालित किया जाता है। समाचार पत्र का यह अंक भी उन्हीं के चरणों में श्रद्धापूर्वक समर्पित है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक-**संजय कुमार** द्वारा आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-41, सेक्टर-8, नोएडा, उत्तर प्रदेश से मुद्रित तथा ए-281सी, गली नं. 3, ए-ब्लॉक, अम्बिका विहार, शिव विहार, दिल्ली-110094 से प्रकाशित। इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत संपादक उत्तरदायी।

RNI No. : DELHIN/2016/70240

Phone No.: 9871221635
E-mail ID: sanjanabharati16@gmail.com
(किसी भी वाद-विवाद में न्याय क्षेत्र दिल्ली ही होगा।)

चीन से क्या हम भाषायी बोध सीख सकते हैं?

अंग्रेजी का पहला वैश्विक विस्तार ब्रिटिश उपनिवेशीकरण के दौर में हुआ और दूसरी बार उसका प्रसार रीगन-थैचर की जोड़ी के आर्थिक उदारीकरण के बढ़ते कदमों के साथ हुआ। इस संदर्भ में चीन और भारत के भाषायी चिंतन और व्यवहार फर्क साफ नजर आता है। पिछली सदी के अस्सी के दशक में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रमुख देंग झिआओपिंग ने आर्थिक खुलेपन की नींव रखी। यह 1978 का साल था

-उमेश चतुर्वेदी

हिंदी के संदर्भ में देखें तो राजभाषा और राष्ट्रभाषा के बीच शाब्दिक ही नहीं, भावात्मक फर्क भी है। फिर भी एक बड़ा वर्ग हिंदी को राष्ट्रभाषा भी मानता है। यही वजह है कि हर साल ग्रेगोरियन कैलेंडर के नौंवे महीने की दस्तक के साथ ही, हर सरकारी दफ्तर राजभाषा पखवाड़े या महीने को लेकर उत्साह से भर उठता है। कुछ ऐसा ही पड़ोसी चीन में भी अब होता नजर आ रहा है। अब वहां सितंबर का तीसरा सप्ताह राष्ट्रीय सामान्य भाषा और लिपि को समर्पित होगा। भारत और चीन के सितंबर महीने के भाषायी उत्साह में एक अंतर रहेगा, राष्ट्रभाषा बनाने की आस में हिंदी के राजभाषा ओहदे को याद किया जाएगा, जबकि चीन अपनी मंदारिन भाषा को बाकायदा राष्ट्रभाषा के तौर पर और आगे बढ़ाने की ओर अग्रसर होगा।

भाषायी चिंतन और व्यवहार को लेकर भारत और चीन को लेकर तकरीबन एक ही सोच है। भारत में एक मानस ऐसा है, जिसे हिंदी की कीमत पर भी पर अंग्रेजी स्वीकार्य है। यह धारा मानती है कि वेगवान आर्थिक विकास की वजह से चीन का भाषायी व्यवहार भी इसी भारतीय मानस की तरह बदल चुका है। बेशक चीन ने अंग्रेजी सीखने-सिखाने की दिशा में भरपूर निवेश किया है। अपनी आर्थिक ताकत के चलते पश्चिम के नामी विश्वविद्यालयों में चीनी सत्ता प्रतिष्ठान अपने लिए अध्ययन पीठ स्थापित कर चुका है। गौर करने की बात है कि उसने यह सब अलग और अतिरिक्त अनुशासन और ज्ञान के साधन के तौर पर किया है, भारत की तरह अपनी भाषा, विशेषकर हिंदी की कीमत पर ऐसा नहीं किया है।

अंग्रेजी का पहला वैश्विक विस्तार ब्रिटिश उपनिवेशीकरण के दौर में हुआ और दूसरी बार उसका प्रसार रीगन-थैचर की जोड़ी के आर्थिक उदारीकरण के बढ़ते कदमों के साथ हुआ। इस संदर्भ में चीन और भारत के भाषायी चिंतन और व्यवहार फर्क साफ नजर आता है। पिछली सदी के अस्सी के दशक में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रमुख देंग झिआओपिंग ने आर्थिक खुलेपन की नींव रखी। यह 1978 का साल था। इसके ठीक दो साल बाद भारत में इंदिरा गांधी की सत्ता में वापसी हुई और उन्होंने भी धीरे-धीरे इंस्पेक्टर राज कम करने की शुरूआत की। उनकी उदारीकरण की सोच को राजीव गांधी ने परवान चढ़ाया। 1991 के आम चुनावों के घोषणा पत्र में कांग्रेस ने पहली बार समाजवादी आर्थिक नीतियों के बरक्स उदारीकरण का वादा किया। तब से अब तक की दोनों देशों की आर्थिक विकास यात्रा को देखें तो अंतर साफ नजर आता है। चीन आज अमेरिका के बाद दुनिया की दूसरी बड़ी आर्थिक महाशक्ति है। उसकी तेज आर्थिक यात्रा के समानांतर अंग्रेजी का विस्तार नहीं दिखता। जबकि भारत में इसके ठीक उलट नजारा दिखता है।

उदारीकरण के बरक्स दोनों देशों के भाषायी चिंतन में भी फर्क नजर आता है। यह फर्क ही है कि चीन अब अपनी मंदारिन भाषा और उसकी लिपि को लेकर सितंबर महीने के तीसरे हफ्ते को समर्पित कर रहा है। चीन की सर्वोच्च विधि निमार्ता संस्था राष्ट्रीय जन प्रतिनिधि सभा की स्थाई समिति द्वारा बीते 27 दिसंबर को इससे जुड़ा कानून पारित करना इसी सोच का प्रतीक है। इस कानून में हर वर्ष सितंबर के तीसरे सप्ताह को राष्ट्रीय सामान्य भाषा और लिपि संवर्धन एवं प्रचार सप्ताह के रूप में मनाना तय किया गया है। यह कानून पुराने राष्ट्रीय भाषा कानून में संशोधन के बाद आया है। चीन में दो तरह की मंदारिन का प्रयोग होता है, एक लिखित और दूसरी मौखिक। इस कानून में दोनों तरह की भाषाओं का ध्यान रखा गया है।

चीन अपनी भाषा और लिपि को अपने राष्ट्र का प्रतीक मानता है। चीन में इन दिनों प्रौद्योगिकी और डिजिटल जगत में लगातार प्रगति हो रही है। यहां ऑडियो-विजुअल प्रोग्रामिंग और गेमिंग भी बढ़ी है। चीन का भाषायी कानून इन सबमें इस्तेमाल होने वाली भाषा के साथ कदमताल करने का प्रयास है। कहा जा सकता है कि चीनी राष्ट्रभाषा और लिपि कानून में यह संशोधन तेजी से विकसित हो रही संचार प्रौद्योगिकियों और ऑनलाइन सामग्री के विस्तार के बीच भाषा के मानकीकरण को मजबूत करने की कोशिश है। इस कानून में साइबरस्पेस प्रशासन को लेकर भी व्यवस्था की गई है। इसके तहत अब ऑनलाइन सांस्कृतिक कार्यक्रमों, वेब सीरीज, ऑनलाइन फिल्मों, ऑनलाइन गेम और अन्य डिजिटल प्रकाशनों में मानक चीनी भाषा यानी मंदारिन और मानकीकृत चीनी अक्षरों को मूल भाषा के रूप में उपयोग करना जरूरी होगा। इसके साथ ही चीन में होने वाली अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों, कॉन्फ्रेंस, इवेंट्स आदि के साइनबोर्ड, लेबल या प्रमोशनल मैटीरियल में विदेशी भाषाओं के साथ ही मानक चीनी भाषा भी शामिल करने पर जोर दिया गया है। इसकी तुलना में भारतीय राष्ट्रभाषा और आधुनिक प्रौद्योगिकी संग उसके तालमेल पर नजर डालें साफ फर्क नजर आता है। भारत अब भी राष्ट्रभाषा से दूर है। हिंदी को राष्ट्रभाषा मानने वाली ताकतों के सुर भी अब धीमे पड़ते जा रहे हैं। लेकिन चीन अपने आर्थिक उदारीकरण के बावजूद अपनी भाषा की ओर लौटता नजर आ रहा है। इसके साथ ही चीन के भाषायी आंकड़ों पर भी नजर डालना जरूरी है। यहां की करीब 80 प्रतिशत से ज्यादा आबादी मंदारिन बोल सकती है। चीन में करीब 97.33 प्रतिशत लोग साक्षर हैं। इनमें करीब 95 प्रतिशत से ज्यादा लोग मानक चीनी अक्षरों का प्रयोग करते हैं। चाइना इंटरनेट नेटवर्क इन्फॉर्मेशन सेंटर की ताजा रिपोर्ट के अनुसार बीते जून तक चीन में एक अरब 12 करोड़ से ज्यादा इंटरनेट यूजर थे। इसी रिपोर्ट के अनुसार, चीन में इंटरनेट इस्तेमाल की दर 79.7 प्रतिशत तक पहुँच गई है। भाषायी कानून में इन आंकड़ों के मद्देनजर सरकारी और पब्लिक सर्विस वेबसाइट और मोबाइल एप्लिकेशन के लिए भी सरकारी नियमों और मानकों के अनुसार, राष्ट्रीय मानक भाषा का इस्तेमाल जरूरी हो गया है। इस कानून का लक्ष्य "चीनी राष्ट्र के प्रति मजूबत सामुदायिक भावना का विकास "और "सांस्कृतिक आत्मविश्वास की मजबूती" है। कानून इस बात पर भी जोर देता है कि बोली और लिखी जाने वाली मानक चीनी भाषा के इस्तेमाल का मकसद राष्ट्रीय संप्रभुता, एकता और जातीय एकजुटता बनाना होना चाहिए। यह कानून शिक्षा में भी मानक चीनी भाषा की भूमिका पर जोर देता है। कानून के अनुसार, शिक्षण और पाठ्य सामग्री में मानक मंदारिन ही बुनियादी भाषा होगी। यह भारत की नई शिक्षा नीति जैसा ही है, जिसमें प्राथमिक स्तर पर भारतीय भाषाओं के जरिए शिक्षण पर जोर दिया गया है। इस कानून के तहत संस्कृति, पर्यटन और ट्रांसपोर्ट जैसे सेक्टर में सर्विस देने वाले कर्मचारियों के लिए मानक मंदारिन जानना जरूरी होगा। इस कानून में मानक चीनी सीखने या प्रयोग में बाधा डालने पर सजा का प्रावधान भी है। हालांकि पहले उन्हें इसके लिए आगाह किया जाएगा। यहां ध्यान देने की जरूरत है कि भारत में भाषा को नकारने को लेकर कोई सजा का प्रावधान नहीं है।

वैसे इस कानून के दुरूपयोग की चिंता भी जताई जा रही है। चीनी संविधान और जातीय स्वायत्तता व्यवस्था के तहत, स्वायत्त क्षेत्रों मसलन, तिब्बत, शिनजियांग, इनर मंगोलिया, गुआंग्शी, निंग्शिया आदि को क्षेत्रीय स्वायत्तता कानूनों के अनुसार, सरकारी कार्यों, शिक्षा और रोजमर्रा की ज़िंदगी में राष्ट्रीय भाषा के साथ-साथ एक या अधिक स्थानीय भाषाओं के इस्तेमाल का प्रावधान है। लेकिन शी चिनफिंग के शासन में ये प्रावधान कमजोर होते गए हैं। इसका असर तिब्बत में दिखता है, जहां कई सालों से चल रहे मातृभाषा आंदोलन और सांस्कृतिक शिक्षा का दमन किया गया। इसकी वजह से वहां निजी स्कूल बंद कर दिए गए और उनके संस्थापक गिरफ्तार कर लिए गए। तिब्बतियों को आशंका है कि इस कानून के तहत उनके खिलाफ दमन का एक और चक्र शुरू हो सकता है। साल 1994 में फ्रांस ने अपने यहां अंग्रेजी के बिलावजह प्रयोग को कानून के जरिए रोक लगाई थी। अब चीन का अपनी मानक भाषा को स्थापित करने का कानून आया है। यह सब देखते हुए भी भारत की मौजूदा राजनीतिक हालात के मद्देनजर ऐसे कानून का सुझाव देना भी संभव नहीं लगता। लेकिन चीन के इस भाषायी बोध के बहान अपेक्षा तो की ही जा सकती है कि एक दिन भारत में भी ऐसी सोच जरूर विकसित होगी।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार एवं स्तम्भकार हैं)

डॉलर साम्राज्यवादः नरेन्द्र नाथ की चेतावनी, नरेन्द्र मोदी की चिंता

विवेकानंद की दृष्टि केवल आध्यात्मिक नहीं थी, बल्कि आर्थिक राजनीतिक भी थी। उन्होंने लिखा कि चीन तेजी से श्रमिक वर्ग की ओर बढ़ रहा है और भविष्य में समाजवाद व सामाजिक क्रांतियाँ सत्ता का केंद्र बदल देंगी। उनका विश्वास था कि आने वाले समय में सत्ता का केंद्र पूँजी से श्रम की ओर और पश्चिम से पूर्व की ओर स्थानांतरित होगा

-ओंकारेश्वर पांडेय

सवा सदी पहले स्वामी विवेकानंद (नरेन्द्र नाथ दत्त) ने जिस आर्थिक प्रभुत्व की आहट महसूस की थी, वही आज 2026 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और पूरी दुनिया के सामने वास्तविकता बनकर खड़ा है। विवेकानंद ने स्पष्ट कहा था कि पश्चिमी ताकतें केवल संस्कृति या व्यापार से नहीं, बल्कि अपनी मुद्रा-डॉलर-के जरिए दुनिया को जकड़ेंगी। उन्होंने यह भी भविष्यवाणी की थी कि इस प्रभुत्व को चुनौती पूरब से ही उठेगी। आज वही परिदृश्य सामने हैः भारत एक कठिन मोड़ पर खड़ा है जहाँ उसे तीन विकल्पों में से चुनना है—अमेरिकी डॉलर के तंत्र का हिस्सा बने रहना, चीन प्रेरित ब्रिक्स की नई मुद्रा को बल देना, या फिर अपने रुपये की गिरती साख को बचाना।

12 जनवरी 1863 को कलकत्ता के एक कुलीन कायस्थ परिवार में जन्मे नरेन्द्रनाथ ने 1893 में हांगकांग और चीन के व्यस्त बंदरगाह कैंटन (ग्वांगझू) की यात्रा की थी। विवेकानंद ने चीन को उस समय एक ऐसे राष्ट्र के रूप में देखा था जो फीनिक्स पक्षी की तरह राख से उठ खड़ा होगा और पश्चिमी साम्राज्यवादी ताकतों के बीच शक्ति का संतुलन पैदा करेगा।

जब वे अमेरिका पहुँचे और वहाँ की अर्थव्यवस्था का सूक्ष्म अवलोकन किया, तो उन्हें अहसास हुआ कि डॉलर केवल व्यापार का साधन नहीं, बल्कि प्रभुत्व का औजार है। उनके पत्रों में यह पीड़ा साफ झलकती है कि अमेरिका ने उन्हें डॉलर साम्राज्यवाद के जरिए छला। आध्यात्मिक आदान प्रदान के वादे के पीछे आर्थिक वर्चस्व का खेल छिपा था।

आर्थिक दृष्टि और भविष्यवाणी-विवेकानंद की दृष्टि केवल आध्यात्मिक नहीं थी, बल्कि आर्थिक राजनीतिक भी थी। उन्होंने लिखा कि चीन तेजी से श्रमिक वर्ग की ओर बढ़ रहा है और भविष्य में समाजवाद व सामाजिक क्रांतियाँ सत्ता का केंद्र बदल देंगी। उनका विश्वास था कि आने वाले समय में सत्ता का केंद्र पूँजी से श्रम की ओर और पश्चिम से पूर्व की ओर स्थानांतरित होगा।

भारतीय रुपया और डॉलर का संघर्ष-नेहरू से लेकर मनमोहन सिंह तक, भारत ने रुपये और डॉलर के बीच संतुलन साधने की कोशिश की। नेहरू ने योजनाबद्ध औद्योगीकरण से स्थिरता का प्रयास किया, शास्त्री के दौर में युद्ध और अकाल ने विनिमय दर पर दबाव डाला। 1966 में इंदिरा गांधी ने निर्यात प्रतिस्पर्धा बढ़ाने के लिए रुपये का बड़ा अवमूल्यन किया। राजीव गांधी ने तकनीकी आधुनिकीकरण और उदारीकरण की खिड़की खोली। 1991 में नरसिंह राव और वित्त मंत्री मनमोहन सिंह ने ऐतिहासिक दो चरणीय अवमूल्यन से संकटग्रस्त अर्थव्यवस्था को बचाया।

2026 की स्थिति-जनवरी 2026 में रुपया डॉलर के मुकाबले 90 रुपया के स्तर पर है और वैश्विक रेटिंग एजेंसियाँ इसके ?94 तक गिरने की आशंका जता रही हैं। ऊर्जा आयात और इलेक्ट्रॉनिक्स पर निर्भरता आज भी भारी पड़ रही है। विपक्ष लगातार हमलावर है कि मोदी सरकार रुपये की साख बचाने में विफल रही है।

मोदी की चीन नीति भी विडंबना से भरी है। 2015 में निवेश की उम्मीदें, 2018 की वुहान स्पिरिट, 2019 का महाबलीपुरम संवाद—इन सबके बावजूद डोकलाम, लद्दाख और गलवान के संघर्षों ने रिश्तों में कड़वाहट भर दी। 2025 में तियानजिन शिखर सम्मेलन में मोदी की शी जिनपिंग और पुतिन से मुलाकात खट्टा मीठा अनुभव रही।

विरोधाभास और आँकड़े-2013 में मुख्यमंत्री रहते हुए मोदी ने कहा था कि रुपया गिरता है तो देश का इकबाल गिरता है। लेकिन आँकड़े बताते हैं कि 2014 में डॉलर 58.58 रुपया पर था, जो जनवरी 2026 तक 90 रुपया तक पहुँच गया-यानी मोदी शासन में रुपये में लगभग 34% से अधिक की गिरावट आई।

ब्रिक्स और नई मुद्रा-2026 में भारत ब्रिक्स की अध्यक्षता कर रहा है। मुख्य एजेंडा स्थानीय मुद्राओं में व्यापार और डॉलर पर निर्भरता कम करना है। चीन अपनी मुद्रा युआन को वैश्विक विकल्प के रूप में पेश कर रहा है। यह वही गूँज है जिसे विवेकानंद ने सवा सदी पहले पहचाना था—कि डॉलर के विरुद्ध प्रतिरोध पूरब से उठेगा।

प्रस्तावित आर5 डिजिटल मुद्रा फिलहाल एक लेखा इकाई के रूप में अंतिम चरण में है और 2026 शिखर सम्मेलन में इसके पायलट लॉन्च की संभावना प्रबल है। लेकिन मोदी के लिए यह कदम आसान नहीं है। यदि वे ब्रिक्स अध्यक्ष के रूप में इस नई मुद्रा को आगे बढ़ाते हैं, तो इसे वॉशिंगटन के वित्तीय प्रभुत्व पर सीधा प्रहार माना जाएगा। नतीजा यह हो सकता है कि अमेरिकी पूँजी भारत से बाहर निकलने लगे और डॉलर की आक्रामकता और बढ़ जाए-जो पहले से ही कमजोर रुपये को और गहरे संकट में धकेल सकती है। इसीलिए भारत आज अभूतपूर्व दबाव में है। चीन कह रहा है कि अमेरिका भारत को धमका रहा है और भारत की चुप्पी वाशिंगटन को और मजबूत करेगी। रूस भी भारत को डॉलर से किनारा करने के लिए उकसा रहा है। ऐसे में मोदी सरकार के सामने यह यक्ष प्रश्न हैः क्या वे ब्रिक्स की नई मुद्रा प्रणाली को मजबूत कर डॉलर को चुनौती देंगे, या गिरते रुपये को बचाने के लिए अमेरिकी तंत्र का सहारा लेंगे?

डॉलर का हथियार-आज अमेरिका डॉलर की शक्ति का उपयोग स्विफ्ट नेटवर्क से बहिष्कार और प्रतिबंधों के लिए कर रहा है। वेनेजुएला और रूस इसके उदाहरण हैं। यही वह डॉलर साम्राज्यवाद है जिसे विवेकानंद ने सवा सदी पहले पहचान लिया था।

तो सत्य ये है-नरेन्द्रनाथ दत्त की अंतर्दृष्टि और नरेन्द्र मोदी की वर्तमान चुनौतियाँ एक ही सत्य के दो पहलू हैं। विवेकानंद ने डॉलर के उदय और उसके प्रतिरोध को भांप लिया था। आज मोदी को ऐसी दुनिया में भारत का नेतृत्व करना है जहाँ वह प्रतिरोध हकीकत बन चुका है, लेकिन उसके साथ नए जोखिम भी जुड़े हैं। भारत को अपनी मुद्रा की मजबूती और वैश्विक वित्तीय पुनर्गठन के बीच स्वाभिमान के साथ सूक्ष्म संतुलन खोजना होगा।

(वरिष्ठ स्तंभकार, राजनीतिक विश्लेषक एवं चुनावी रणनीतिकार)

खेल/विदेश/कारोबार/फिल्म

ग्रीनलैंड को लेकर ट्रंप का सख्त रुख, रूस-चीन का हवाला देकर अमेरिका की चेतावनी

(एजेन्सी)।

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने रविवार को एक बार फिर विवादित बयान देते हुए कहा है कि अमेरिका ग्रीनलैंड को किसी न किसी तरीके से अपने नियंत्रण में लेगा हैं। उनका दावा है कि यदि वॉशिंगटन ने कदम नहीं उठाया तो रूस और चीन इस क्षेत्र पर प्रभाव बढ़ा सकते हैं, जो अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा होगा।

मौजूद जानकारी के अनुसार ट्रंप ने यह टिप्पणी एयर फोर्स वन में पत्रकारों से बातचीत के दौरान की, जहां उन्होंने कहा कि खनिज-संपन्न ग्रीनलैंड रणनीतिक रूप से बेहद अहम है और आर्कटिक क्षेत्र में रूसी और चीनी सैन्य गतिविधियों में बढ़ोतरी को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता हैं। गौरतलब है कि रूस या चीन ने अब तक ग्रीनलैंड पर किसी प्रकार का औपचारिक दावा नहीं किया है, इसके बावजूद ट्रंप लगातार इस मुद्दे को उठा रहे हैं।

ट्रंप ने यह भी कहा कि वह डेनमार्क के स्वशासित क्षेत्र ग्रीनलैंड के साथ किसी समझौते के लिए तैयार हैं, लेकिन अंततः अमेरिका वहां अपनी मौजूदगी सुनिश्चित करेगा हैं। उनके इस बयान से डेनमार्क और अन्य यूरोपीय सहयोगी देशों में चिंता और नाराजगी देखने को मिल रही है। बता दें कि ग्रीनलैंड उत्तर अमेरिका और आर्कटिक के बीच स्थित है और द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से वहां अमेरिका का एक सैन्य अड्डा मौजूद है, जो इसकी रणनीतिक अहमियत को दर्शाता है। गौरतलब है कि ग्रीनलैंड 1953 तक डेनमार्क का उपनिवेश रहा और इसके बाद उसे स्वशासन मिला।

पिछले कुछ वर्षों से वहां राजनीतिक स्तर पर डेनमार्क से संबंधों को धीरे-धीरे ढीला करने पर भी चर्चा होती रही है। हालांकि ग्रीनलैंड की अधिकांश आबादी और राजनीतिक दलों का साफ कहना है कि वे अमेरिकी नियंत्रण में नहीं जाना चाहते और अपने भविष्य का फैसला खुद करना चाहते हैं, लेकिन ट्रंप इस दृष्टिकोण को लगातार चुनौती देते रहे हैं।

ट्रंप ने अपने बयान में ग्रीनलैंड की सुरक्षा व्यवस्था का मजाक उड़ाते हुए कहा कि वहां की रक्षा केवल दो डॉग स्लेज जैसी है, जबकि रूस और चीन के पास युद्धपोत और पनडुब्बियां हैं। इस बयान को लेकर कूटनीतिक हलकों में नाराजगी देखी जा रही है। वहीं डेनमार्क की प्रधानमंत्री ने हाल ही में चेतावनी दी थी कि अगर अमेरिका बलपूर्वक ग्रीनलैंड पर कब्जा करने की कोशिश करता है तो इससे पिछले 80 वर्षों से चली आ रही ट्रांस-अटलांटिक सुरक्षा व्यवस्था को गंभीर नुकसान पहुंचेगा।

हालांकि ट्रंप ने इस चेतावनी को खारिज करते हुए कहा कि यदि इसका असर नाटो पर पड़ता है तो पड़े, लेकिन ग्रीनलैंड को अमेरिका की जरूरत कहीं ज्यादा है। इस पूरे घटनाक्रम ने एक बार फिर यह सवाल खड़ा कर दिया है कि आर्कटिक क्षेत्र में बढ़ती भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा आने वाले समय में वैश्विक संतुलन को किस दिशा में ले जाएगी।

शक्षगाम घाटी को लेकर भारत-चीन के बीच तनाव

(एजेन्सी)।

अंतरराष्ट्रीय कूटनीति में एक कहावत है कि जहां पर आपका ध्यान है वहां पर कुछ नहीं होता और जहां पर आपकी नजरें नहीं जाती असली खेल वहीं हो रहा होता है।

भारत के तमाम डिफेंस एक्सपर्ट हो या फिर पॉलिटिकल एनालिसिस जो करने वाले हैं वह हैं। सबका ध्यान ईरान तो वेनेजुएला तो अमेरिका तो ट्रंप तो यूक्रेन रूस ये सब पे रहा लेकिन हम चूक गए हैं। हमारा ध्यान चीन की तरफ नहीं गया और इस बीच चीन ने खेला कर दिया। खेला हुआ नहीं है लेकिन खेला करने की तैयारी भरपूर थी। कुछ दिनों पहले आपने सुना होगा कि अरुणाचल प्रदेश को लेकर चीन ने अपना दबाव बढ़ाना शुरू कर दिया है।

अरुणाचल प्रदेश के एक दो नागरिकों को अपने यहां पकड़ा और यह कहा कि भाई ये तुम्हारा भारतीय पासपोर्ट यहां काम नहीं करेगा क्योंकि अरुणाचल चीन का हिस्सा है। अरुणाचल पे हमारा दावा आज भी है और ठोस दावा है।

अरुणाचल पर प्रेशर बढ़ाते-बढ़ाते चीन ने एक और कांड कर दिया। अ सुदूर जब आप लेह लद्दाख जाते हैं ना तो जिस भाग को पाकिस्तान ने चीन को दिया था यानी अक्साई चीन का इलाका उसका और हमारे जम्मू कश्मीर के इलाके के बीच एक वैली है वैली घाटी जिसका नाम है शक्सगाम घाटी। अब चीन ने वहां पे रोड बनाना शुरू कर दिया। अचानक सेटेलाइट की तस्वीरें आई और सेटेलाइट तस्वीरों में यह नजर आने लगा कि चीन तो बड़े धड़ल्ले से शक्षगाम घाटी में रोड बना रहा है।

विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा हम तथाकथित चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (सीपीईसी) को भी मान्यता नहीं देते, क्योंकि यह भारतीय क्षेत्र से होकर गुजरता है जिसपर पाकिस्तान का अवैध और जबरन कब्जा है।

बल्लेबाज विराट कोहली ने रचा इतिहास

(एजेन्सी)।

भारत के दिग्गज बल्लेबाज विराट कोहली ने न्यूजीलैंड के खिलाफ पहले एकदिवसीय मैच में 93 रनों की मैच जिताऊ पारी खेलते हुए अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में एक बड़ा कीर्तिमान अपने नाम कर लिया है। इस पारी के साथ कोहली सभी फॉर्मेट मिलाकर अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में दूसरे सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी बन गए हैं। मौजूद जानकारी के अनुसार कोहली ने इस दौरान श्रीलंका के पूर्व कप्तान कुमार संगकारा को पीछे छोड़ दिया है, जिनके नाम 28,016 अंतरराष्ट्रीय रन दर्ज हैं। अब इस सूची में कोहली से आगे केवल महान भारतीय बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर हैं, जिनके नाम 34,357 रन दर्ज हैं। कोहली ने 2008 में श्रीलंका के खिलाफ वनडे डेब्यू करने के बाद अब तक टेस्ट, वनडे और टी20 क्रिकेट में कुल 28,068 रन बनाए हैं।

गौरतलब है कि वडोदरा में खेले गए इस मुकाबले में भारत को जीत के लिए 301 रनों का लक्ष्य मिला था। कोहली की 91 गेंदों में खेली गई 93 रनों की पारी की बदौलत टीम इंडिया ने चार विकेट और छह गेंद शेष रहते यह लक्ष्य हासिल कर लिया और तीन मैचों की सीरीज में 1-0 की बढ़त बना ली है। इस शानदार प्रदर्शन के लिए कोहली को प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया है। मैच के बाद कोहली ने अपनी यात्रा को याद करते हुए कहा कि जब वह अपने करियर पर नजर डालते हैं तो यह किसी सपने के सच होने जैसा लगता है। उन्होंने कहा कि उन्हें हमेशा अपनी क्षमता पर भरोसा रहा है, लेकिन यहां तक पहुंचने के लिए कड़ी मेहनत जरूरी थी। उन्होंने ईश्वर का आभार जताते हुए कहा कि वह अपने सफर को गर्व और कृतज्ञता के साथ देखते हैं।

अपने खेल में बदलाव को लेकर कोहली ने बताया कि अब वह पारी की शुरूआत में ही पहले 20 गेंदों का बेहतर इस्तेमाल करने पर ध्यान देते हैं और मौका मिलने पर गेंदबाजों पर दबाव बनाते हैं। रोहित शर्मा के जल्दी आउट होने के बावजूद कोहली ने रक्षात्मक खेल अपनाने के बजाय आक्रामक रुख दिखाया और न्यूजीलैंड के गेंदबाजी आक्रमण को बैकफुट पर धकेल दिया है।

गौरतलब है कि किंग कोहली के नाम से मशहूर 37 वर्षीय यह बल्लेबाज अब केवल वनडे प्रारूप में ही भारत का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। विराट कोहली और रोहित शर्मा दोनों ही टी20 और टेस्ट क्रिकेट से संन्यास ले चुके हैं। क्रिकेट जगत में अब इन दोनों दिग्गजों के भविष्य को लेकर चर्चा तेज है और माना जा रहा है कि उनका अगला बड़ा लक्ष्य 2027 का वनडे विश्व कप हो सकता है।

दिसंबर में बढ़ी महंगाई दर, फिर भी रिजर्व बैंक के लक्ष्य से नीचे, नीति दर कट पर नजर

(एजेन्सी)।

दिसंबर में देश की खुदरा महंगाई दर बढ़कर 1.33 प्रतिशत पर पहुंच गई है, जो नवंबर में 0.7 प्रतिशत थी। सरकारी आंकड़ों के अनुसार यह बीते तीन महीनों का उच्चतम स्तर है, हालांकि इसके बावजूद महंगाई लगातार चौथे महीने भारतीय रिजर्व बैंक की निचली सहनशील सीमा 2 प्रतिशत से नीचे बनी हुई है। गौरतलब है कि साल 2025 में औसतन महंगाई दर करीब 2.2 प्रतिशत रही है, जो पिछले एक दशक में सबसे निचले स्तरों में से एक मानी जा रही है। इसमें सबसे बड़ा योगदान खाद्य वस्तुओं की कीमतों में आई तेज गिरावट का रहा है। मौजूद जानकारी के अनुसार साल के मध्य के बाद से महंगाई दबाव में साफ तौर पर नरमी देखने को मिली है।

दिसंबर का आंकड़ा एक और वजह से अहम माना जा रहा है। यह 2012 आधार वर्ष के तहत जारी होने वाला आखिरी उपभोक्ता मूल्य सूचकांक है। फरवरी 12 को जनवरी का जो डेटा आएगा, वह नए 2024 आधार वर्ष पर आधारित होगा। नए आधार में उपभोग टोकरी को अपडेट किया गया है और गैर-खाद्य वस्तुओं का वजन पहले से अधिक रखा गया है, जिससे महंगाई की तस्वीर में बदलाव दिख सकता है।

मौजूदा सीपीआई में खाद्य वस्तुओं का हिस्सा आधे से भी ज्यादा है, जिस वजह से सब्ज़ियों, अनाज या दालों की कीमतों में उतार-चढ़ाव सीधे हेडलाइन महंगाई को प्रभावित करता है। यही कारण है कि कई बार गैर-खाद्य कीमतें स्थिर रहने के बावजूद कुल महंगाई में तेज बदलाव नजर आता है। दिसंबर में खाद्य महंगाई लगातार सातवें महीने नकारात्मक दायरे में रही है। हालांकि इसमें गिरावट की रफ्तार कुछ कम हुई है और फूड इंडेक्स -3.9 प्रतिशत से सुधरकर -2.71 प्रतिशत पर आ गया है। अनाज की बात करें तो 51 महीनों बाद इसमें पहली बार 0.5 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई है। वहीं सब्ज़ियां और दालें लगातार 11वें महीने भी सस्ती रहीं हैं। तेल और फलों की कीमतें भी क्रमशः 15 और 16 महीने के निचले स्तर पर दर्ज की गई हैं।

रानी मुखर्जी ने 'मर्दानी 3' और बिना किसी 'मास्टर प्लान' की सफलता पर की खुलकर बात

(एजेन्सी)। भारतीय सिनेमा की सबसे प्रभावशाली अभिनेत्रियों में से एक, रानी मुखर्जी ने फिल्म इंडस्ट्री में अपने शानदार तीन दशक पूरे कर लिए हैं। 'राजा की आएगी बारात' से शुरू हुआ यह सफर आज उस मुकाम पर है जहाँ वे अपनी शर्तों पर फिल्में चुनती हैं। हाल ही में एक बातचीत के दौरान रानी ने अपनी यात्रा, सिनेमा के प्रति अपने साहस और बहुप्रतीक्षित फिल्म 'मर्दानी 3' पर दिल खोलकर चर्चा की। एक्ट्रेस ने यश राज फिल्म्स के ऑफिशियल सोशल मीडिया हैंडल पर एक पर्सनल नोट शेयर करके इस मील के पत्थर को सेलिब्रेट किया। उन्होंने अपने करियर पर बात की, और कहा कि यह इंस्टिंक्ट से बना है, न कि एम्बिशन से। मुखर्जी ने अपनी जर्नी को कहानी कहने के प्यार, इमोशनल ईमानदारी और एक ऐसी मजबूती से भरा बताया जिसने सालों से उनके फैसलों को तय किया है। इस पल को "अनरियल" बताते हुए, मुखर्जी ने लिखा कि समय बहुत जल्दी बीत गया क्योंकि उन्होंने एक्टिंग को कभी मंज़िल नहीं माना। उन्होंने कहा, "मैं फिल्मों में कोई मास्टर प्लान लेकर नहीं आई थी," यह याद करते हुए कि सिनेमा उन्हें लगभग इत्तेफाक से मिला। अपनी पहली फिल्म के सेट पर एक नर्वस लड़की से लेकर हिंदी सिनेमा की सबसे पसंदीदा फीमेल स्टार्स में से एक बनने तक, उन्होंने खुद को अभी भी उस शुरूआती कमजोरी और जिज्ञासा को हर रोल में ले जाने वाला बताया। 'ब्लैक' से लेकर 'हिचकी' और 'मिसेज चटर्जी वर्सेस नॉर्वे' तक, रानी ने हमेशा चुनौतीपूर्ण भूमिकाएँ चुनी हैं। उन्होंने कहा कि एक अभिनेत्री के तौर पर उनका साहस तब दिखता है जब वे व्यावसायिक सफलता के बजाय सार्थक सिनेमा को चुनती हैं।

किसी भी अन्य जॉनर की तरह ही चुनौतीपूर्ण होती है कॉमेडी

फुकरे फिल्म में एक्टर पुलकित सम्राट और वरुण शर्मा की केमिस्ट्री ने दर्शकों का खूब मनोरंजन किया था। यह जोड़ी एक बार फिर फिल्म राहु-केतु के जरिए धमाल मचाने आ रही है। फिल्म के रिलीज से पहले वरुण और पुलकित ने बातचीत की। इस दौरान उन्होंने फिल्म के टाइटल से लेकर शूटिंग के अनुभव के बारे में बताया। एक्टर वरुण शर्मा ने कहा, फिल्म का टाइटल राहु-केतु सिर्फ एक नाम नहीं, बल्कि करियर और दोस्ती के यादगार पल दिलाने वाला प्रतीक है। मैंने और पुलकित ने एक-दूसरे के साथ दस साल से ज्यादा समय बिताया है और यह हमारी पांचवीं फिल्म है। जैसे राहु और केतु हमेशा हमारे जीवन में चलते रहते हैं। वैसे ही हमारी दोस्ती और काम करने का सफर भी बेहद खूबसूरत तरीके से आगे बढ़ रहा है। फिल्म स्क्रिप्ट को लेकर वरुण ने कहा, राहु-केतु केवल दर्शकों को हंसाने वाली फिल्म नहीं है। इसके साथ ही इसमें एक संदेश भी छिपा है। फिल्म के लेखक और निर्देशक विपुल विग ने कहानी में इस तरह की परतें डाली हैं कि दर्शक फिल्म देखकर हल्का महसूस करेंगे। हंसते-हंसते खुद को और अपने कर्मों को भी समझ पाएंगे। इस फिल्म के जरिए नया साल हंसी और पॉजिटिविटी के साथ शुरू करने का मौका मिलेगा। पुलकित सम्राट ने कॉमेडी को लेकर अपने विचार साझा किए। उन्होंने कहा, कॉमेडी किसी भी अन्य जॉनर की तरह ही चुनौतीपूर्ण होती है। हर सीन में मेहनत लगती है और सही समय पर हंसी लाना बहुत मुश्किल होता है।
वहीं पुलकित ने कहा, वरुण से मैंने बहुत कुछ सीखा है, खासकर टाइमिंग के मामले में। उसके साथ काम करने से मेरी कॉमिक स्किल्स और परफॉर्मेंस में निखार आया है। मुझे कभी वरुण के साथ फिल्मों में काम करना बोरिंग नहीं लगा। लोग हमारी बॉन्डिंग को पसंद करते हैं। हम हर बार नए अंदाज में आते।

'जन नायकन' के बाद विजय के फिल्मों से दूरी बनाने पर मालविका मोहनन ने जताया दुख

तमिल सुपरस्टार थलापति विजय की आखिरी फिल्म 'जन नायकन' की रिलीज फिलहाल टल गई है। 9 जनवरी को रिलीज होने वाली फिल्म सेंसर सर्टिफिकेट न मिल पाने के कारण रिलीज नहीं हो सकी। फिल्म का मामला अभी भी मद्रास हाईकोर्ट में लंबित है। इस बीच अब विजय व 'जन नायकन' के सपोर्ट में तमिल इंडस्ट्री उतर आई है। इस बीच आज ही रिलीज हुई प्रभास की फिल्म 'द राजा साब' की अभिनेत्री मालविका मोहनन ने थलापति विजय को लेकर बात की है। साथ ही 'जन नायकन' के बाद विजय के फिल्मों से संन्यास लेने पर उन्होंने निराशा जताई है।

विजय की फिल्में बनाती हैं त्योहार जैसा माहौल

इंडिया टुडे के साथ बातचीत के दौरान मालविका मोहनन ने 'जन नायकन' के बाद विजय के सिनेमा से दूरी बनाने पर दुख व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि उनके सभी प्रशंसकों की तरह मुझे भी बड़े पर्दे पर उनकी कमी खलेगी। उनकी हर फिल्म रिलीज होती है, तो ऐसा लगता है जैसे कोई त्योहार हो। उनकी फिल्म रिलीज से पहले पूरे तमिलनाडु के माहौल में जबरदस्त जोश और उत्साह होता है। इसे महसूस करने के लिए आपको वास्तव में चेन्नई, तमिलनाडु में होना पड़ेगा। बहुत कम अभिनेता अपनी फिल्मों की रिलीज के समय ऐसा माहौल बना पाते हैं।

विजय कभी खुद को सुपरस्टार जैसा नहीं समझते

मालविका ने थलापति विजय के साथ 'मास्टर' फिल्म में काम भी किया है। विजय के साथ काम करने के अनुभव को याद करते हुए एक्ट्रेस ने कहा कि 'मास्टर' में उनके साथ काम करने का बहुत अच्छा अनुभव रहा। आपको ऐसा महसूस नहीं होता कि आप किसी बड़े सुपरस्टार के साथ काम कर रहे हैं। वह बहुत ही प्यारे, विनम्र और एक बेहतरीन इंसान हैं और आपकी बातों को अच्छे से सुनते हैं। वह सचमुच आपके बारे में जानना चाहते हैं। वह सुनते हैं, लोगों को परखते हैं और उनकी समझ बहुत गहरी है।

इस वजह से टली 'जन नायकन' की रिलीज

एच. विनोथ द्वारा निर्देशित जना नायकन राजनीतिक करियर में कदम रखने से पहले विजय की आखिरी फिल्म मानी जा रही है। यह फिल्म 9 जनवरी यानी आज ही रिलीज होनी थी। लेकिन सेंसर से सर्टिफिकेट नहीं मिला। इसके बाद मेकर्स मद्रास हाईकोर्ट गए, लेकिन अब तक वहां भी फिल्म के सेंसर सर्टिफिकेट को लेकर कोई फैसला नहीं आया है। इस वजह से फिल्म की रिलीज फिलहाल टल गई है। मेकर्स ने एक बयान जारी कर इस बारे में बताया कि भारी मन से हम अपने सभी दर्शकों के साथ यह खबर साझा कर रहे हैं। 9 जनवरी को रिलीज होने वाली जन नायकन की रिलीज कुछ अपरिहार्य परिस्थितियों के कारण स्थगित कर दी गई है, जिन पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं है।

'द राजा साब' में नजर आई हैं मालविका मोहनन

मालविका मोहनन प्रभास स्टारर द राजा साब में नजर आई हैं। 'द राजा साब' आज यानी 9 जनवरी को ही सिनेमाघरों में रिलीज हुई है। इस हॉरर-कॉमेडी फिल्म में प्रभास और मालविका के अलावा निधि अग्रवाल, रिद्धि कुमार, संजय दत्त और बोमन ईरानी भी प्रमुख भूमिकाओं में नजर आए हैं।

रोमांटिक कॉमेडी में अच्छी कहानियों की तलाश कर रही हैं दीपिका पादुकोण

हाल ही में दीपिका पादुकोण ने मुंबई में अपने फैंस के लिए एक स्पेशल फैन मीट सेशन रखा था। इस दौरान एक्ट्रेस देश भर के 50 फैंस से मिलीं। इस सेशन में फैंस ने दीपिका से खूब सवाल पूछे और उन्होंने सबका जवाब भी दिया। सेशन के दौरान एक्ट्रेस से पूछा गया कि वो कब किसी रोमांटिक कॉमेडी फिल्म में नजर आएंगी? इस पर उन्होंने जवाब दिया- 'मुझे पूरी उम्मीद है कि बहुत जल्द। जैसा कि आप सभी जानते हैं, यह मेरी पसंदीदा जोनर है। एक ऑडियंस के तौर पर भी और एक एक्ट्रेस के तौर पर भी। मुझे लगता है कि अभी के माहौल में दर्शक कुछ अलग देखना चाहते हैं। लेकिन अगर आप में से इतने सारे लोग रोमांटिक कॉमेडी देखना चाहते हैं, तो मुझे यकीन है कि पब्लिक का एक बड़ा हिस्सा यही चाहती है।'
जैसे ही दीपिका ने यह कहा एक फैन ने ऋतिक रोशन का नाम लिया। सेशन के होस्ट ने इस बात पर वहां मौजूद फैंस से एक एक पोल कराया कि रोमांटिक कॉमेडी में दीपिका को किसके साथ काम करना चाहिए... ऋतिक रोशन, शाहरुख खान या उनके पति रणवीर सिंह। फैंस ने शाहरुख और ऋतिक के नाम पर चीयर किया लेकिन सबसे ज्यादा रणवीर सिंह के नाम को समर्थन मिला। बातचीत के दौरान, दीपिका ने शाहरुख खान, रणवीर सिंह या रणबीर कपूर के साथ एक रोमांटिक कॉमेडी फिल्म में स्क्रीन साझा करने की संभावना के बारे में बात की और स्वीकार किया कि वो इस जोनर में अच्छी कहानियों की तलाश कर रही हैं। ऐसी अफवाह चल रही है कि दीपिका अयान मुखर्जी की अगली रोमांटिक फिल्म के लिए रणबीर कपूर के साथ काम कर सकती हैं। हालांकि, इस बारे में अभी तक कोई आधिकारिक घोषणा नहीं हुई है।
उन्होंने कहा- यह ऐसी चीज है जिसकी तलाश में मैं और मेरी टीम लगी रहती हैं। हम लगातार ड्रामा, लव स्टोरी, रोमांटिक कॉमेडी, जैसे जोनर की फिल्में ढूंढते रहते हैं। लेकिन मुझे लगता है कि इस तरह के कंटेंट को सपोर्ट करने वाले या इस समय इस तरह की फिल्में और टीवी शो लिखने वाले बहुत कम मेकर्स हैं।' दीपिका ने अपने फैंस से यह भी पूछा कि क्या वे रोमांटिक कॉमेडी फिल्म को ओटीटी पर देखना पसंद करेंगे या थिएटर में। फैंस ने जवाब में थिएटर कहा। फिर दीपिका ने पूछा- अगर मैं ओटीटी पर काम करूं तो क्या आप नाराज होंगे? एक फैन ने जवाब दिया- आप बड़े पर्दे के लिए ही बनी हैं। एक अन्य फैन ने मजाकिया अंदाज़ में कहा- जब तक आपका किरदार नहीं मरता, तब तक सब ठीक है। दीपिका हंसते हुए कहती हैं- मेरी मां भी यही कहती रहती हैं। बता दें कि दीपिका की कई फिल्मों में उनके किरदारों की मौत हो जाती है, जिनमें उनकी पहली फिल्म ओम शांति ओम, गोलियों की रासलीला रामलीला, पद्मावत और जवान शामिल हैं। दीपिका जल्द ही शाहरुख खान की फिल्म किंग में नजर आएंगी। इसके अलावा, वह अल्लू अर्जुन के साथ एटली की फिल्म में काम कर रही हैं।

प्रियदर्शन ने फिल्म धुरंधर की सक्सेस पर खुशी जताई

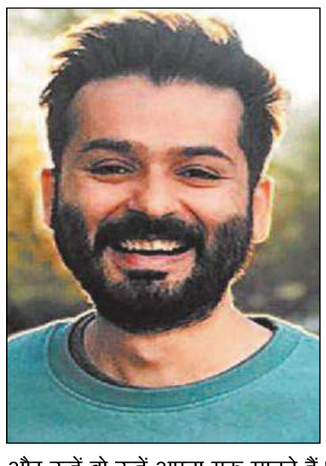

आदित्य धर की फिल्म धुरंधर ने बॉक्स ऑफिस पर शानदार सफलता हासिल की है। फिल्म ने दुनियाभर में 1200 करोड़ रुपए से ज्यादा की कमाई कर ली है। बुधवार को फिल्ममेकर प्रियदर्शन ने फिल्म की सक्सेस पर खुशी जताते हुए इसके डायरेक्टर आदित्य धर को बधाई दी। बता दें कि आदित्य धर ने अपने करियर के शुरुआती दौर में प्रियदर्शन के साथ काम किया था और उन्हें वो उन्हें अपना गुरु मानते हैं। धर ने प्रियदर्शन की दो फिल्मों आक्रोश (2010) और तेज (2012) के डायलॉग लिखे हैं। प्रियदर्शन ने इंस्टाग्राम पर धर के साथ अपनी एक पुरानी तस्वीर शेयर की। इसके साथ उन्होंने लिखा कि अपने शिष्य को इतनी बड़ी सफलता हासिल करते देखना सबसे बड़ी खुशी होती है। उन्होंने धुरंधर की सफलता के लिए धर को बधाई और धुरंधर 2 के लिए शुभकामनाएं भी दीं। प्रियदर्शन की इस पोस्ट पर धन्यवाद देते हुए धर ने कमेंट सेक्शन में लिखा, मेरे सबसे प्यारे प्रियदर्शन सर... यह मेरे लिए इतना मायने रखता है कि मैं इसे शब्दों में पूरी तरह कह भी नहीं सकता। आपने मुझ पर तब भरोसा किया, जब मैं कुछ भी नहीं था और मेरे पास सिर्फ कंविक्शन और कुछ लिखे हुए पन्ने थे।
उन्होंने आगे लिखा, आपने मुझे बराबरी का दर्जा दिया और सिर्फ काम ही नहीं, बल्कि उससे कहीं ज्यादा कीमती चीजें दीं। सम्मान, भरोसा और अपनापन। एक ऐसी इंडस्ट्री में, जहां मैंने अक्सर यह सीखा कि क्या नहीं करना चाहिए, वहां आपने मुझे साफ तौर पर सिखाया कि क्या करना चाहिए। सिर्फ एक फिल्ममेकर के तौर पर नहीं, बल्कि एक इंसान के तौर पर भी। धर ने यह भी लिखा, आक्रोश और तेज के लिए डायलॉग लिखने से लेकर आज यहां तक पहुंचने तक, हर कदम पर आपकी छाप रही है। मैं हमेशा सबसे पहले आपका ही छात्र रहूंगा। हर चीज के लिए धन्यवाद, सर। यह सफलता जितनी मेरी है, उतनी ही आपकी भी है। फिल्म धुरंधर रिलीज के 35 दिन बाद भी बॉक्स ऑफिस पर अच्छी कमाई कर रही है।

हमारी इंडस्ट्री में आज भी हीरो को पूजा जाता है

राशि खन्ना ने हिंदी फिल्म मद्रास कैफे से एक्टिंग का ककहरा सीखा, फिर जल्द ही तमिल-तेलुगू सिनेमा को भी साध लिया। पैन इंडिया कलाकार बन चुकीं राशि आने वाले दिनों में पवन कल्याण के साथ तेलुगू फिल्म उस्ताद भगत सिंह में नजर आएंगी। यही नहीं, वह तमिल फिल्म राउडी एंड कंपनी और हिंदी फिल्म तलाखों में एक और ब्रिज में भी दिखेंगी। ओटीटी पर भी अजय देवगन के साथ रुद्र- द एज ऑफ डार्कनेस और शाहिद कपूर की फर्जी में उन्होंने अपनी छाप छोड़ी है। बीते साल 2025 में तीन अलग-अलग भाषाओं में वह तीन फिल्मों - 120 बहादुर (हिंदी), तेलुसु कड़ा (तेलुगू) और अगाथिया (तमिल) में अलग-अलग किरदार में पसंद की गईं। करियर के इस पड़ाव पर राशि बहुत उत्साहित हैं।

आप दिल्ली में पली-बढ़ी, मुंबई में करियर शुरू किया, अब हैदराबाद में सेटल हैं, तो इन अलग-अलग शहरों ने आपको कैसे गढ़ा?

सच कहूं कि कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं कौन हूं, क्योंकि मैं इतने किरदार निभाती हूं और वो किरदार करते हुए मैं वही बन जाती हूं। फिर वो तमिल हो, तेलुगू हो या हाल ही में मैंने पंजाबी, राजस्थानी, बंगाली किरदार किए तो मेरे मैनेजर बोलते हैं कि आप पैन इंडिया हैं (हंसती हैं)। मैं हैदराबाद में रहती हूं, तो यह शहर अब घर बन चुका है। दिल्ली और मुंबई मैं आती-जाती रहती हूं। मैं फूडी हूं और दिल्ली के खाने का कोई मुकाबला नहीं है। अच्छी बात ये है कि मेरी मम्मी साथ में रहती हैं तो वो दिल्ली वाले छोले भटूरे या कुल्चे छोले घर पर बना देती हैं। फिर भी, वेस्ट दिल्ली में एक ज्वाला हेरी मार्केट थी, जहां हम गोलगप्पे खाने जाते थे, तो वो टिक्की और गोलगप्पे अब भी याद आते हैं। मुंबई की सबसे अच्छी बात वहां की सेफ्टी है। वहां रात के 12 बजे भी ऑटो लेकर कहीं भी जा सकते हैं, घूम सकते हैं। मैं जब मुंबई में रहती थी तो ऑटो में बहुत घूमती थी। अब भी कभी-कभी ऑटो लेकर चली जाती हूं, मगर मेरे मैनेजर मना करते हैं। मुंबई की एक अच्छी बात यह भी है कि यहां सब अपने काम से मतलब रखते हैं।

आपने बॉलीवुड फिल्म मद्रास कैफे से करियर शुरू किया था। फिर साउथ की ओर कैसे मुड़ीं? हिंदी में ही आगे बढ़ने का ख्याल नहीं आया?

असल में, मैं फिल्में देखकर बड़ी नहीं हुई हूं। मेरी सिनेमा में कोई रुचि भी नहीं थी तो जब मैंने मद्रास कैफे की तो ये नहीं सोचा था कि अरे, मैं स्टार बनूंगी या मुझे स्टार बनना है। मुझे बस उस सेट पर काम करना अच्छा लगा तो धीरे-धीरे मैं और काम करती गई। मैंने तो यह भी सोचा था कि मद्रास कैफे के बाद अगर ढंग की फिल्म नहीं मिली तो मैं कुछ और कर लूंगी। लेकिन तभी मुझे मेरी पहली तेलुगू फिल्म मिली, जो बहुत सारे लोगों को अच्छी लगी। फिर मुझे काम मिलता गया और मैं करती गई। मैंने कभी ये सब सोचा ही नहीं कि हिंदी करना है या साउथ में करना है। ये चीजें आपके हाथ में होती भी नहीं हैं। होता वही है जो किस्मत में होता है तो मैं इन चीजों में सरेंडर करना पसंद करती हूं। मुझे जहां अच्छी फिल्में मिलेंगी, मैं करूंगी।

आप बिना किसी फिल्मी कनेक्शन के यहां तक पहुंची हैं। एक आउटसाइडर होने का क्या खामियाजा महसूस हुआ?

यह जरूरी नहीं है कि अगर आप इंडस्ट्री से हैं तो आपको काम मिलता ही रहेगा। हो सकता है कि थोड़े समय तक मिले, पर आगे बढ़ने के लिए आपमें टैलंट होना भी जरूरी है। ये सही है कि हम जैसे बाहर से आए एक्टर्स को थोड़ी ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है, पर मैं मेहनत से कभी नहीं डरी। मुझे पता था कि ये परिस्थितियां हैं, इनका मैं कुछ नहीं कर सकती। मेरे हाथ में सिर्फ मेरी मेहनत है। चाहे कोई फिल्म मुझे मिली या ना मिली, उसकी अलग-अलग वजहें होंगी, लेकिन मैंने खुद को कभी बेचारी या विक्टिम की तरह नहीं देखा। मैंने सिर्फ मेहनत की। रिजेक्शन भी मिला तो मैं समझती हूं कि ये बिजनेस है या उन्हें किसी और को फेवर करना है तो मैं बुरा नहीं मानती। मुझे लगता है कि जो आपकी किस्मत में है वो मिलना ही है। उसे आपसे कोई ले नहीं सकता।

इंडस्ट्री में गैर-बराबरी को लेकर बहुत सी एक्ट्रेसेज ने खुलकर बोला है। आपका इस मामले में क्या अनुभव रहा है?

हमारा समाज ही पितृसत्तात्मक है। इंडस्ट्री में भी हम थोड़ा हीरो वरशिप (हीरो की पूजा) करते हैं। इसलिए, उन्हें ज्यादा इज्जत मिलती है। हालांकि, अब चीजें बदल रही हैं, क्योंकि लड़कियां बोलने लगी हैं। फिर भी अभी पूरी तरह से नहीं बदली है तो निश्चित तौर पर सेट पर ट्रीटमेंट के मामले में एक्टर और एक्ट्रेस के बीच थोड़ा अंतर होता है, क्योंकि प्रोड्यूसर्स का कहना है कि जिसका बॉक्स ऑफिस पुल ज्यादा होगा, जो ज्यादा ऑडियंस लाएगा, उसे ज्यादा इज्जत मिलेगी। हो सकता है कि भविष्य में यह सोच बदले। उसमें वक्त लगेगा लेकिन चीजें बदलेंगी।

प्रवाह परिवार के पटल पर एक हजार कवियों के साथ ऑनलाइन 'काव्य का महाकुंभ'

एसबी ब्यूरो

बेगूसराय। प्रवाह परिवार संस्था के प्रभास द्वारा मकर संक्रांति के पावन अवसर पर आगामी 14 जनवरी 2026 को एक भव्य ऑनलाइन काव्य महाकुंभ का आयोजन किया जा रहा है। यह आयोजन साहित्य और कविता प्रेमियों के लिए एक ऐतिहासिक अवसर सिद्ध होगा, जिसमें देशझविदेश से एक हजार से अधिक कवि एवं कवयित्री एक ही मंच पर अपनी रचनाओं का काव्यपाठ करेंगे। ये कार्यक्रम 14 जनवरी, 2026 से लेकर 14 फरवरी, 2026 तक अनवरत चलता रहेगा।

इस काव्य महाकुंभ की मुख्य अतिथि के रूप में रेखा शर्मा 'स्नेहा' (संस्थापक एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष-काव्य हिंदुस्तान अंतरराष्ट्रीय साहित्य समूह) लीचीपुरम, मुजफ्फरपुर बिहार से गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराएँगी। कार्यक्रम की अध्यक्षता विनोद रावत जी (उत्तराखंड) द्वारा की जाएगी, जिनके साहित्यिक अनुभव और मार्गदर्शन से यह आयोजन और भी अधिक गरिमामय एवं प्रेरक बनेगा।

इस काव्य महाकुंभ में विविध भाषाओं, शैलियों और संवेदनाओं से सजी सशक्त एवं भावपूर्ण रचनाओं की प्रस्तुति होगी। यह साहित्यिक संध्या भारतीय साहित्य की बहुरंगी परंपरा को एक सूत्र में पिरोते हुए रचनात्मक संवाद का सशक्त माध्यम बनेगी।

प्रवाह परिवार संस्था का यह आयोजन न केवल उभरते रचनाकारों को राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने का कार्य करेगा, बल्कि वरिष्ठ कवियों के अनुभवों से नई पीढ़ी को भी प्रेरणा प्रदान करेगा। ऑनलाइन माध्यम से होने के कारण यह आयोजन देशझविदेश में बैठे साहित्य प्रेमियों को एक साथ जोड़ने में सफल होगा। इस आयोजन की सफलता हेतु प्रवाह परिवार की राष्ट्रीय कार्यकारिणी एवं समन्वय समिति की

सक्रिय भूमिका रहेगी, जिसमें प्रमुख रूप से श्वेता श्रीवास्तव (उत्तर प्रदेश), सुमन गर्ग (नई दिल्ली), राजु धाकड़ 'सरल' (मध्य प्रदेश) एवं राकेश बहादुर कपूर (हरियाणा) का विशेष सहयोग एवं मार्गदर्शन प्राप्त होगा।

इस अवसर पर संस्था के संस्थापक हिमांशु पाठक (हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखंड) ने कहा कि-प्रवाह परिवार का उद्देश्य कविता को जनझजन तक पहुँचाना और रचनाकारों को एक सशक्त, सम्मानजनक मंच प्रदान करना है। मकर संक्रांति के पावन पर्व पर आयोजित यह काव्य महाकुंभ साहित्यिक एकता और सृजनात्मक ऊर्जा का प्रतीक बनेगा।

साहित्य प्रेमियों में इस आयोजन को लेकर विशेष उत्साह का माहौल है। आयोजक मंडल द्वारा सभी साहित्य प्रेमियों की उपस्थिति सादर अनुरोध पर अनिवार्य बताई गई है। किसी भी प्रकार की जानकारी अथवा सहभागिता हेतु इच्छुक रचनाकार एवं श्रोता मोबाइल नंबर 7669481741 पर संपर्क कर सकते हैं।

सांसद नवीन जिंदल ने पत्रकारों संग मनाई लोहड़ी एवं मकर संक्रांति

एकता, सौहार्द और स्वस्थ रहने का दिया संदेश

एसबी ब्यूरो प्रमुख/निर्मल कुमार कैथल। सांसद नवीन जिंदल ने सोमवार को ग्रेस होटल में लोहड़ी एवं मकर संक्रांति का त्यौहार स्थानीय पत्रकारों और मीडिया कर्मियों के साथ बेहद उत्साहपूर्ण माहौल में मनाया। कार्यक्रम का आयोजन एक अनौपचारिक और आत्मीय वातावरण में किया गया। इस अवसर पर उन्होंने लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के साथ अपने संबंधों को और प्रगाढ़ करने की बात भी कही, वहीं एकता, सौहार्द और स्वस्थ रहने का संदेश भी दिया।

मीडिया से रूबरू होते हुए नवीन जिंदल ने कहा कि पत्रकार समाज का आईना होते हैं। आमजन की आवाज सरकार व प्रशासन तक पहुंचाने का काम करते हैं। समाज में आपकी अहम भूमिका है। सरकार की कल्याणकारी योजनाओं को आमजन तक पहुंचाएं, ताकि प्रत्येक पात्र व्यक्ति योजनाओं का लाभ उठा सके। उन्होंने कहा लोहड़ी एवं मकर संक्रांति का त्यौहार नई ऊर्जा का प्रतीक है। जिंदल ने इस आयोजन के माध्यम से आपसी भाईचारे और सांप्रदायिक सौहार्द पर जोर दिया। उत्सव के बीच उन्होंने अनौपचारिक बातचीत में कैथल और आसपास के क्षेत्रों के विकास के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई।

उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के मार्गदर्शन में क्षेत्र के विकास के लिए निरंतर कार्य किया जा रहा है। युवाओं में खेलों के प्रति रुझान पैदा करने के लिए भी हाल में सांसद खेलकूद प्रतियोगिता करवाई गई। हमें कोई न कोई खेल जरूर खेलना चाहिए, ताकि हमारा शरीर शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ रहे। खेल खेलने से हम या तो जीतते हैं या फिर सीखते हैं। उन्होंने पत्रकारों से आह्वान किया कि वे अपने व्यस्त जीवन में कुछ समय निकाल कर हर रोज व्यायाम जरूर करें। स्वस्थ रहने के लिए अच्छी नींद भी जरूर लें।

युवाओं में कौशल विकास के लिए प्रधानमंत्री सेतु योजना शुरू की गई है, जिसके माध्यम से विभिन्न आईटीआई को अपग्रेड किया जाएगा। इसका उद्देश्य युवाओं में स्किल विकसित करके उन्हें आत्मनिर्भर बनाना है। कार्यक्रम में उपस्थित विभिन्न मीडिया संस्थानों के प्रतिनिधियों ने सांसद की इस पहल का स्वागत किया। पत्रकारों ने कहा कि इस तरह का आयोजन जन प्रतिनिधियों के साथ संवाद का एक सकारात्मक माध्यम बनता है।

स्वामी विवेकानंद थे युवाओं के अग्रदूत : डॉ. बलराम शर्मा

एसबी विशेष संवाददाता/मदन पुरी करनाल। हिमगिरी डिग्री कॉलेज, रुड़की (उत्तराखंड) के राजनीतिक विज्ञान विभाग द्वारा राष्ट्रीय युवा दिवस का आयोजन बड़े उत्साह और धूमधाम के साथ किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में डीएवी कॉलेज, करनाल के राजनीतिक विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ. बलराम शर्मा ने शिरकत की। कॉलेज परिसर में पहुंचने पर प्रबंधकीय समिति के अध्यक्ष विक्रांत कौशिक एवं प्राचार्य डॉ. संयोगिता कौशिक ने पुष्पगुच्छ भेंट कर उनका स्वागत किया।

अपने संबोधन में डॉ. बलराम शर्मा ने कहा कि स्वामी विवेकानंद युवाओं के सच्चे अग्रदूत थे। उन्होंने युवा पीढ़ी को अध्यात्मवाद का मार्ग दिखाया और राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया। आज भारत विश्व में अध्यात्मवाद का गुरु बना है, जिसके पीछे स्वामी विवेकानंद की शिक्षाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने युवाओं से असफलताओं से निराश न होकर सतत परिश्रम के माध्यम से सफलता प्राप्त करने का संदेश दिया। डॉ. शर्मा ने कहा कि स्वामी विवेकानंद के विचारों से प्रेरित होकर ही अनेक युवाओं ने स्वतंत्रता आंदोलन में अहम भूमिका निभाई। उन्होंने शिक्षा की अनिवार्यता और चरित्र निर्माण पर विशेष बल दिया, जिनसे आज के

युवाओं को प्रेरणा लेनी चाहिए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कॉलेज अध्यक्ष विक्रांत कौशिक ने कहा कि युवा देश की रीढ़ हैं और राष्ट्र का विकास उनके कंधों पर टिका है। युवाओं को कड़ी मेहनत के साथ राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका सुनिश्चित करनी चाहिए। प्राचार्य डॉ. संयोगिता कौशिक ने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने वैश्विक शांति और सहिष्णुता का संदेश दिया, जो आज के समय में सभी राष्ट्रों के लिए अत्यंत आवश्यक है।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. रुचि पुंडीर ने किया। कार्यक्रम के अंत में कॉलेज अध्यक्ष विक्रांत कौशिक एवं प्राचार्य डॉ. संयोगिता कौशिक ने मुख्य अतिथि डॉ. बलराम शर्मा को अंगवस्त्र एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। इस अवसर पर उप-प्राचार्य शहजादी, प्राध्यापक डॉ. अनीता, डॉ. अफान, अनुज सैनी, रविंद्र राणा, विकास पालीवाल सहित सैकड़ों विद्यार्थी उपस्थित रहे।

आर.बी. कॉलेज, दलसिंहसराय में राष्ट्रीय युवा दिवस समारोह आयोजित

एसबी ब्यूरो

दलसिंहसराय। रामाश्रय बालेश्वर महाविद्यालय, दलसिंहसराय में महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. वीरेंद्र कुमार चौधरी की अध्यक्षता एवं एनसीसी पदाधिकारी सह आइक्यूएसी समन्वयक लेफ्टिनेंट डॉ. धीरज कुमार पांडे एवं एनएसएस कार्यक्रम पदाधिकारी डॉ. सुनील कुमार सिंह के नेतृत्व में राष्ट्रीय युवा दिवस समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान स्वामी विवेकानंद के तेल चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर उनके प्रति श्रद्धा निवेदित की गई। दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम की विधिवत शुरूआत हुई। अपने संबोधन में डॉ. पांडे ने स्वामी विवेकानंद के व्यक्तित्व एवं उनके आध्यात्मिक पक्ष पर प्रकाश डाला। डॉ. सोहित राम ने अपने संबोधन में स्वामी विवेकानंद के दर्शन एवं उनके पंचशील उपदेशों को प्रस्तुत किया।

डॉ. हरीश सामरिया ने विवेकानंद के उपदेशों को उद्धृत करते हुए गुरु-शिष्य परंपरा को आत्मसात करने का आह्वान किया। एनसीसी कैडेट्स सारजेंट प्रणय आशीष आदि ने आज के दिवस पर प्रासंगिक अभिव्यक्ति प्रस्तुत की। अपने अध्यक्षीय संबोधन में डॉ. चौधरी ने कहा कि स्वामी विवेकानंद युवाओं के प्रेरणा स्रोत रहे हैं। युवाओं पर ही देश का भविष्य टिका होता है। स्वामी विवेकानंद ने अपने दर्शन, आध्यात्मिक ज्ञान एवं व्यवहारिक शिक्षा के माध्यम से भारत ही नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व के युवाओं को मानवता का पाठ पढ़ाया है। उन्होंने जनमानस को लौकिक एवं पारलौकिक आनंद की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त किया है। आवश्यकता है कि हमारे युवा अपने मन की अज्ञानता को दूर करते हुए, अध्ययन के प्रति सजग रहते हुए उनके द्वारा बताए गए मार्ग पर चलकर अपना, अपने समाज एवं राष्ट्र का नाम रोशन करें। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सुनील ने किया।

मौके पर महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ. संजय कुमार सुमन, डॉ. अनूप कुमार, डॉ. सुनील कुमार शाह, डॉ. निभा कुमारी सिंह, डॉ. अविनाश कुमार प्रसाद आदि, शिक्षकेतर कर्मचारी, एनसीसी कैडेट्स, स्वयं सेवक एवं अन्य छात्र-छात्राएं उपस्थित थे। राष्ट्रगान की सामूहिक प्रस्तुति के साथ कार्यक्रम की समाप्ति हुई।

अधिकारी लंबित शिकायतों का शीघ्र करें निपटान: एडीसी

एडीसी ने की समाधान शिविर में आमजन की शिकायतों की सुनवाई

एसबी ब्यूरो प्रमुख/निर्मल कुमार कैथल। एडीसी डा. सुशील कुमार ने कहा है कि आमजन की शिकायतों का समयबद्ध और प्रभावी समाधान कराना जिला प्रशासन की सर्वोच्च प्राथमिकता है। किसी विभाग में ज्यादा समय तक कोई शिकायत लंबित न रहे, शिकायतों पर तुरंत संज्ञान लेते हुए कार्रवाई सुनिश्चित करें और नागरिकों की जन शिकायतों का शीघ्र समाधान करें।

एडीसी डा. सुशील कुमार सोमवार को लघु सचिवालय सभागार में आयोजित समाधान शिविर में आमजन की शिकायतों की सुनवाई करने के दौरान अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दे रहे थे। एडीसी ने कहा कि आमजन की शिकायतों को नजरअंदाज करना किसी भी स्तर पर स्वीकार नहीं किया जाएगा। अधिकारी आमजन की शिकायतों के निवारण की दिशा में तत्परता से कार्रवाई कर उन्हें राहत पहुंचाई जाएं। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में हरियाणा सरकार की ओर से जिला और उपमंडल स्तर पर समाधान शिविर आयोजित किए जा रहे हैं, जो आमजन की शिकायतों के समाधान का सशक्त माध्यम बन रहे हैं। सभी विभागाध्यक्ष शिकायतों का प्राथमिकता के आधार पर पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाने के लिए नियमित निगरानी और त्वरित कार्रवाई करना सुनिश्चित करें।

एडीसी ने बताया कि मुख्यमंत्री आमजन से जुड़ी योजनाओं व सेवारत पोर्टल की स्वयं मॉनिटरिंग करते हैं, ऐसे में सभी विभागाध्यक्ष अपने विभाग से संबंधित शिकायतों को उक्त पोर्टल पर समाधान सुनिश्चित करें।

इस अवसर पर सीटीएम गुरविंद्र सिंह, डीएसपी सुशील प्रकाश तथा विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

बेटियां किसी भी क्षेत्र में बेटों से पीछे नहीं: विधायक योगेन्द्र राणा

संजना भारती संवाददाता

असंध। गांव मर्दान हेड़ी में लोहड़ी बेटी के नाम कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें एक वर्ष से कम आयु की बच्चियों की पहली लोहड़ी मनाई गई। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर असंध विधायक योगेन्द्र राणा व विशिष्ट अतिथि के तौर पर मार्केट कमेटी चेयरमैन असंध प्रवीण राणा व महिला थाना असंध से सुदेश ने शिरकत की।

कार्यक्रम आयोजक कुलदीप सिंह मल्ली ने विधायक योगेन्द्र राणा का पुष्पगुच्छ भेंट कर व शॉल ओढ़ाकर स्वागत किया गया। विधायक योगेन्द्र राणा ने कहा कि आज के समय में किसी भी क्षेत्र में बेटियां बेटों से पीछे नहीं है। हर क्षेत्र में बेटियां सफलता का परचम लहरा रही है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वर्ष 2015 में पानीपत से बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ की शुरूआत की थी। जिसके सार्थक परिणाम आज हमारे सामने है। उन्होंने कहा कि बेटियों के लिए सरकार ने अनेक योजनाएं क्रियान्वित की है। जिनका लाभ बेटियों को मिल रहा है। विधायक ने सभी को लोहड़ी की शुभकामनाएं दी और एक वर्ष से कम आयु की बच्चियों के माता-पिता को उपहार भेंट कर सम्मानित किया। सरपंच कुलदीप मल्ली ने कहा कि समाज को संवारने में बेटियों का हमेशा सराहनीय योगदान रहा है। ऐसे पर्व हमारी सांस्कृतिक धरोहर है, जिनके माध्यम से नई पीढ़ी को परंपराओं से जोड़ने और उनमें आत्मविश्वास व जोश भरने का कार्य किया जाता है।

इस अवसर पर असंध मार्केट कमेटी वाईस चेयरमैन राम अवतार जिंदल, राजेंद्र सिंह रोकी मद्दू, दिलबाग मूंड, अनित चोपड़ा, जगतार सिंह नंबरदार, अंग्रेज सिंह पंच, अमित कुमार, पंच, अमृत पंच, आशा वर्कर करिश्मा, गुरदीप कौर, गुरविंदर सिंह भिंडर, पूर्व सरपंच सतनाम सिंह, वीरेंद्र सिंह, हरमन सिंह, गुरबाज सिंह व मलूक सिंह मल्ली सहित अन्य मौजूद रहे।

पुलिस सम्मान समारोह आयोजित

संजना भारती ब्यूरो प्रमुख इन्तजार हुसैन बदायूँ। राजमहल गार्डन में बदायूं ज्वेलर्स एसोसिएशन एवं भारत विकास परिषद बदायूं द्वारा पुलिस सम्मान समारोह का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक द्वारा मां सरस्वती के सामने दीप जलाकर एवं माल्यार्पण करके किया गया।

बदायूं में विगत दिनों में ज्वेलर्स के यहाँ हुई घटनाये जिनमे जुगल किशोर, प्रहलादलाल ज्वेलर्सदायूँ, खितौरा मे दिनदहाड़े हुई सराफ के यहां लूट, गुलडिया में सर्राफ के हुई लूट का एस एसपी महोदय डॉ बृजेश कुमार सिंह के नेतृत्व में जो पुलिस टीम द्वारा घटना का सफल अनावरण एवं एवं लूट का सारा सामान बरामद करने के इस उत्कृष्ट कार्य के लिए एस एसपी सहित पुलिस की सारी टीम को जिसमें एसपी सिटी एसपी देहात क्षेत्राधिकारी बदायूं, क्षेत्राधिकारी उझानी क्षेत्राधिकारी बिल्सी एसओजी टीम, सर्विलांस टीम, S H. O कोतवाली, SHO सिविल लाइन्स, R. I. पुलिस लाइन, महिला थाना एवं उनकी टीम स्वार्ट टीम एवं महिला शक्ति मिशन की सारी टीम एवं पी. आर. ओ.को प्रशस्ति पत्र एवं मोमेंटो देकर और शाल पहनाकर सम्मानित किया। सभा का संचालन आर.के. उपाध्याय कोषाध्यक्ष भारत विकास परिषद एवं समाजसेवी तथा रचना शंखधार समाजसेवी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया।

विकसित भारत: वीबी-जी राम जी योजना से ग्रामीण भारत को आत्मनिर्भर बनाने का लक्ष्य

एसबी विशेष संवाददाता/मदन पुरी करनाल। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा प्रस्तुत 'विकसित भारत 2047' के विजन को साकार करने के लिए केंद्र सरकार ने ग्रामीण भारत को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने की दिशा में विकसित भारतझवीबी-जी राम जी योजना को महत्वपूर्ण आधार बनाया है। इस योजना का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार, आजीविका, जल सुरक्षा, बुनियादी ढांचे और जलवायु अनुकूलन के माध्यम से स्थायी संपत्तियों का निर्माण करना है।

एनडीआरआई के निदेशक धीर सिंह ने बताया कि विकसित भारत मिशन चार प्रमुख क्षेत्रों-ग्रामीण विकास, युवाओं में कौशल विकास, सतत कृषि प्रौद्योगिकी और महिला सशक्तिकरण-पर केंद्रित है। इन क्षेत्रों के समन्वित विकास से देश को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने का लक्ष्य रखा गया है।

वीबी-जी राम जी योजना के तहत ग्रामीण विकास को गति देने के लिए रोजगार और आजीविका की गारंटी को सशक्त किया गया है। इसके साथ ही राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (दीनदयाल अंत्योदय योजना) के माध्यम से महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों और किसान उत्पाद संगठनों से जोड़कर लखपति दीदी, ड्रोन दीदी जैसी पहलों के जरिए उद्यमिता को बढ़ावा दिया जा रहा है। युवाओं के लिए प्रधानमंत्री विकसित भारत रोजगार योजना को संगठित क्षेत्र में पहली बार रोजगार पाने वालों के लिए लागू किया गया है।

लोगों की समस्याओं को लेकर सतर्क रहें ग्रामीण स्तर पर कर्मचारी व अधिकारी: डीसी अपराजिता

सोलू माजरा में रात्रि प्रवास के दौरान डीसी ने सुनी जनसमस्याएं, अधिकारियों को दिए त्वरित समाधान के निर्देश

एसबी ब्यूरो प्रमुख/निर्मल कुमार कैथल। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के विजन प्रशासन गांव की ओर को अमलीजामा पहनाते हुए सोमवार को जिला प्रशासन कैथल द्वारा गांव सोलू माजरा में रात्रि प्रवास कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें डीसी अपराजिता ने लोगों की समस्याएं सुनकर मौके पर ही उनके समाधान के निर्देश दिए। कार्यक्रम में पहुंचीं पुलिस अधीक्षक उपासना ने कानून-व्यवस्था और नशा मुक्ति पर ग्रामीणों के साथ संवाद किया। राजकीय प्राथमिक विद्यालय में आयोजित इस कार्यक्रम में भारी संख्या में ग्रामीणों ने अपनी शिकायतें और मांगे प्रशासन के समक्ष रखीं।

ग्रामीणों ने प्रशासन के सामने गांव की बुनियादी सुविधाओं से जुड़ी मांगें रखीं, जिनमें मुख्य रूप से गांव की फिरनी को पक्का करना, नई स्ट्रीट लाइटें लगवाना, गांव में चौकीदार की नियुक्ति करना, घर के ऊपर से गुजर रही 33 केवी की लाइन हटाने, नाला बनवाने, शस्त्र लाइसेंस ट्रांसफर करवाने, दिव्यांग पेंशन की गार्जियनशिप बनवाने, निशानदेही, स्पीड ब्रेकर संकेतक लगाने,

कालोनी में पानी की निकासी की समस्या, प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ बारे तथा श्मशान घाट की सफाई करवाने जैसी मांगें रखीं। डीसी अपराजिता ने सभी शिकायतों में एक-एक करके संबंधित विभागों के अधिकारियों से फीडबैक लिया। उन्होंने मौके पर ही एक बुजुर्ग की दिव्यांग पेंशन बनाने के निर्देश दिए। एक ग्रामीण द्वारा उसके भाईयों द्वारा नशे करने की शिकायत पर डीसी ने डिप्टी सीएमओ को निर्देश दिए कि नशा करने वाले दोनों भाईयों को नशा मुक्ति केंद्र में दाखिल करवाएं। उन्होंने निर्देश दिए कि जो समस्याएं जिला स्तर पर सुलझाई जा सकती हैं, उन पर तुरंत कार्रवाई की जाए। वहीं, मुख्यालय स्तर की मांगों के लिए संबंधित विभाग को तुरंत पत्र लिखने के आदेश दिए।

ग्रामीणों को संबोधित करते हुए डीसी अपराजिता ने कहा कि प्रशासन का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि किसी भी नागरिक को अपने काम के लिए सरकारी दफ्तरों के चक्कर न काटने पड़ें। यदि कोई समस्या है, तो पहले स्थानीय कर्मचारी और अधिकारी को बताएं। यदि वहां समाधान नहीं होता, तो मेरे पास आएं। प्रशासन आपकी हर जायज समस्या का समाधान करने के लिए प्रतिबद्ध है। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के निर्देशानुसार हर सोमवार व वीरवार को जिला स्तर एवं उप मंडल स्तर पर समाधान शिविर आयोजित किया जा रहे हैं, वहां भी अपनी समस्या रख सकते हैं। जहां आपकी समस्याओं का त्वरित समाधान किया जाता है। उन्होंने ग्रामीणों से प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना का लाभ लेने तथा केंद्र सरकार की महत्वाकांक्षी एग्री स्टैक योजना के तहत यूनिक फार्मर आईडी बनवाने का आह्वान किया।

डीसी ने कर्मचारियों व अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि गांव स्तर की समस्याओं को लेकर सतर्क रहें। गांव वासी उन्हें किसी समस्या के बारे में बताएं तो उसका हर संभव समाधान का प्रयास करें। जिला स्तर पर मामला तभी पहुंचे, जब संबंधित विषय गांव स्तर के कर्मचारी या उससे जुड़े अधिकारी की क्षमता से बाहर का हो। ऐसा करने से गांव वासियों को अपनी छोटी-छोटी समस्याओं के लिए जिला स्तर पर चक्कर नहीं काटने पड़ेंगे।

गांवों में सरकारी कर्मचारी अपने-अपने विभाग से जुड़ी योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए गांव वासियों के साथ संपर्क में रहें और पात्र लोगों तक उनका लाभ पहुंचाएं। उन्होंने ग्रामीणों का भी आह्वान किया कि अपनी समस्याओं को लेकर पहले ग्राम, खंड एवं उपमंडल स्तर पर संबंधित अधिकारियों व कर्मचारियों को अवगत करवाएं। यदि इन स्तरों पर समस्याओं का समाधान नहीं होता तो लघु सचिवालय स्थित उनके कार्यालय में आएं।

विकसित भारत-गारंटी फॉर रोजगार एंड आजीविका मिशन पर भाजपा जिलाध्यक्ष ने आयोजित की प्रेस वार्ता

एसबी ब्यूरो प्रमुख/डॉ संजय

हाजीपुर। भाजपा के जिलाध्यक्ष, अजय कुशवाहा ने रविवार को सायं काल प्रेसवार्ता आयोजित कर बताया कि विकसित भारत गारंटी फॉर रोजगार एंड आजीविका मिशन (ग्रामीण) अर्थात भी०बी० जी राम जी के तहत भारत सरकार ने ग्रामीण रोजगार के ढांचे में बदलाव करते हुए मनरेगा की जगह अब विकसित भारत-जी राम जी योजना को लागू करने का निर्माण लिया है। यह (2025-26) ग्रामीण विकास को विकसित भारत 2047 के लक्ष्य से जोड़ने के लिए लाया गया है। उन्होंने इस योजना के बारे में विस्तार से बताया कि यह योजना केवल गड्ढे खोदने तक सीमित न रहकर ग्रामीण बुनियादी ढांचे के निर्माण और श्रमिकों की आय बढ़ाने पर केंद्रित है। हर गरीब को रोजगार मिले और उसकी गरिमा का सम्मान हो। गरीब, जनजाति और पिछड़ा को रोजगार मिले, इसके लिए यह कानून आया है। यह बिल महात्मा

गांधी की भावना के अनुरूप है और राम राज की कल्पना के लिए लाया जा रहा है। उन्होंने यह भी बताया कि आखिर कांग्रेस और इंडी गठबन्धन को विकसित भारत और भगवान राम से इतनी नफरत क्यों है? कांग्रेस कितनी भी साजिश रच ले, देश 2047 तक विकसित भारत बन कर रहेगा। कांग्रेस की सरकार में मनरेगा में कोई ट्रांसपेरेंसी नहीं थी, लेकिन इसमें रियल टाइम डेटा अपलोड होगा। जीपीएस और मोबाइल मॉनिटरिंग होगी और एआई के द्वारा ब्रांड डिटेक्शन होगा। इससे सही लाभार्थियों को काम मिलेगा और उनके जीवन स्तर में सुधार होगा। नये कानून का फोकस क्रमशः जल संबंधी कार्य,कोर - ग्रामीण बुनियादी ढांचा का निर्माण, आजीविका संबंधी बुनियादी ढांचा का निर्माण और खराब मौसम के कारण काम में कमी को कम करना है। जल सुरक्षा से खेती को बढ़ावा मिलेगा, सड़कें और कनेक्टीविटी से बाजार में सुधार होगा, भंडारण और आजीविका संपत्तियां ग्रामीण आय में वृद्धि लाएंगी तथा जलवायु अनुकूल कार्य गांव को सशक्त बनायेंगे।

इस नये बिल में यह भी प्रावधान किया गया है कि मनरेगा के उलट हर हफ्ते पेमेंट किया जा सकता है। रोजगार गारंटी के तहत 125 दिन का काम मिलेगा। इस प्रेस वार्ता के मौके पर गठबंधन के जिलाध्यक्षों तथा नेताओं की उपस्थिति रही।